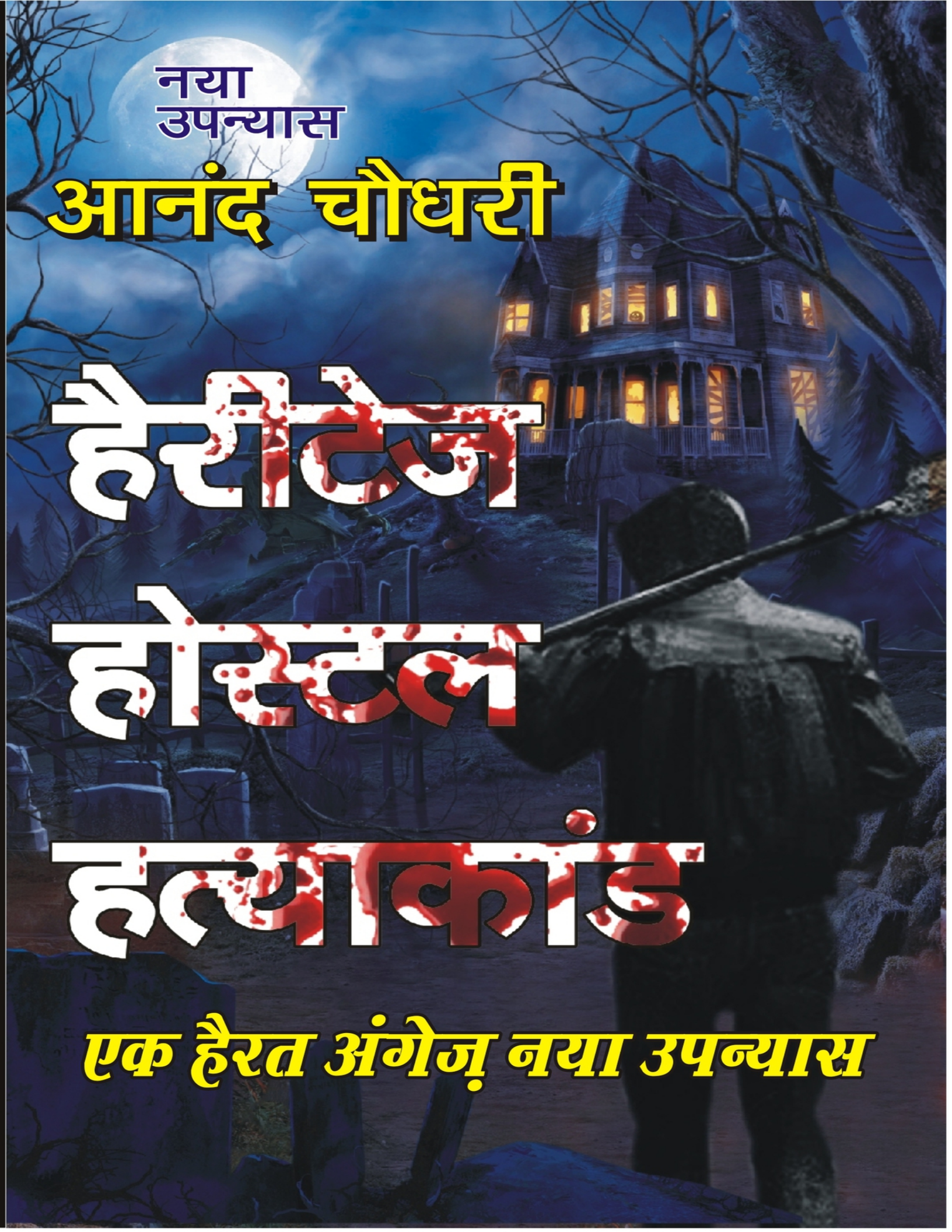
नया
उपन्यास
आनंद चौधरी
हैरीटेज
होस्टल
हत्याकांड
एक हैरत अंगेज़ नया उपन्यास

# *हैरीटेज होस्टल हत्याकांड*

*आनंद चौधरी*

**लेखकीय,**

प्रिय पाठकों, प्रस्तुत उपन्यास "हैरीटेज हॉस्टल हत्याकांड" जो एक जबरदस्त मर्डर-मिस्ट्री ड्रामा है, को लेकर एक बार फिर से मैं आपकी अदालत में हाजिर हूँ !

यह एक ऐसे विचित्र और अजीबो-गरीब कत्ल की कहानी है, जिसे सभी लोग एक पिशाच-लीला समझ रहे थे ! कत्ल का तरीका और सारे परिस्थिति-जन्य सबूत चीख-चीख कर ये गवाही दे रहे थे कि ऐसा कारनामा किसी आदम-जात के बस की बात ही नहीं थी ! फिर इस केस में रॉ के सीनियर एजेंट सुनील कुमार की एंट्री होती है ! और फिर इस केस मे सुनील की एंट्री क्या गुल खिलाती है, ये जानने के लिए प्रस्तुत इस उपन्यास को पढ़ें ! आपकी अदालत में प्रस्तुत इस उपन्यास के प्रति आप लोगों का जो कुछ भी निर्णय होगा, वह मुझे सहर्ष कबूल होगा ! अपने पिछले उपन्यास "साजन मेरे शातिर" के प्रति जिस तरह से ई-मेल, मैसेज आदी के जरिए आपलोगों का प्यार मिला, वो मेरे लिए किसी ईनाम से कम नहीं है! उपन्यास को... विशेष करके उसके कथानक को खूब-खूब सराहा गया ! टाईप-सैटिंग में कुछ खामियाँ थी ! जो आगे कभी भी न दोहराई जाएगी ! लेकिन उपन्यास का अंत लाजवाब था ! मैं संतुष्ट हूँ कि बदौलत "साजन मेरे शातिर" मेरे पाठकों के दिमाग को मनोरंजन की भरपूर खुराक मिली ! आप सभी पाठकों ने मेरा जो उत्साह बढ़ाया, इसके लिए हम आप सबके आभारी हैं ! इसी तरह से हमेशा मुझ पर अपना स्नेह और प्यार-दुलार बनाए रखें !

विनीत,

आनंद चौधरी 25-01-2021 मोबाईल-8578853325 Email– omkarengineering.1525@gmail.com

# *हैरीटेज होस्टल हत्याकांड*

## *आनंद चौधरी*

एक हल्की सी आहट सुन कर शीतल की नींद खुल गई ! नजर सामने कमरे में ठीक बीचो-बीच खड़ी एक सड़ी-गली लाश पर पड़ी ! और नजर पड़ते हीं वो यूं चिहुंक कर बेड पर से उछल पड़ी, जैसे उसकी बेड गरम तवे मे तब्दील हो गई हो ! लाश को देख कर उसके प्राण हलक मे जा फंसे ! डर के मारे चेहरे पर मानो हल्दी पुत गई ! टांगे कत्थक करने लगी ! चिल्लाने के लिए उसके होंठ कांपे, मगर कंठ से बोल न फुटे ! जैसे जुबान तालु से जा चिपकी हो !

कमरे में इस वक्त जीरो वाट का एक हरा नाईट बल्ब जल रहा था ! जिसकी हल्की मंद रौशनी में लाश की अंगारे जैसी लाल आँखें शीतल पर फोकस थी ! मानो दो लाल बल्ब उसे फोकस करके जल रहे हों ! देखने का अंदाज़ ऐसा था, मानो सोंचा जा रहा हो कि इस जिंदा आदमजात का क्या किया जाए?

इधर बिजली की तरह शीतल के जेहन मे ये सवाल कौंधा कि ये लाश अंदर कमरे मे आया कैसे ?

जवाब की आशा मे उसने दरवाजे की तरफ देखा ! दरवाजा अब भी ठीक उसी तरह अंदर से बंद था, जैसे वो सोते वक्त बंद करके सोई थी ! हॉस्टल का मेन गेट भी रात दस बजे के बाद बंद हो जाता था ! गेट पर नाईट शिफ्ट मे दो गार्ड का सख्त पहरा होता था ! जहाँ से किसी अवांछित व्यक्ति का प्रवेश करना नामुमकिन था ! और किसी तरह से ये लाश मेन गेट पार करके हॉस्टल मे घुस भी गई होगी, तो फिर उसके इस बेडरूम जो अभी तक अंदर से बंद था, में कैसे घुसी?

जो हो चुका था, वो किसी भी तरह से मुमकिन नही था ! तो आखिर ये लाश अंदर आया कैसे ? सोंच कर शीतल का दिमाग अंतरिक्ष में नाचने लगा !

अभी शीतल के जेहन मे ये सब चल हीं रहा था कि लाश आहिस्ते-आहिस्ते संतुलित कदमों से चलता हुआ शीतल की तरफ बढ़ा ! शीतल की रीढ़ की हड्डी मे सिहरन सी दौड़ गई ! उसकी हालत ठीक उस बकरी की तरह हो गई, जिसे हलाल करने के लिए कसाई छुरा लेकर उसकी तरफ बढ़ता है !

[] [] []

सुनील पाठक साहब के बुलावे पर अपने केबिन से निकल कर उनके ऑफिस के सामने पहुँचा ! सीधे-सीधे ऑफिस में जाने की बजाय वो ऑफिस के सामने केबिन में अपनी सीट पर बैठी लेडी एजेंट पूजा के पास पहुँच कर ठिठका, फिर उसने तिरछी निगाह से पूजा की तरफ देखा !

"नमस्ते जासूस साहब !"-पूजा तपाक से बोली !

बनावटी गुस्से में सुनील बोला-"नमस्ते कर रही है या लठ्ठ मार रही है? जरा अदब से नमस्ते कर ! देखती नहीं कि, सामने सीनियर खड़ा है !"
"सो तो है... सो तो है"-व्यंग्य-पूर्वक पूजा बोली-"आखिर य्ये इतने बड़े जासूस हो !"
य्ये शब्द को उसने खासतौर से लंबा करते हुए य्ये कहा था ! नादान लड़की रॉ के कोहिनूर का मजाक उड़ा रही थी !
अपने शर्ट के कॉलर को खड़ा करके गर्व से छाती फुलाते हुए सुनील बोला-"वो तो मैं हूँ हीं बालिके, आजकल अपने दरवाजे पर भी लड़की वालों की लाइन लगती है ! वैसे तू अगर शादी के लिए हाँ बोल, तो मैं तेरे लिए कुछ खास डिस्काउंट पर आम का अचार खाकर एक बार विचार कर सकता हूँ ! बोल करेगी मुझसे शादी?"
"नहीं!"
"नहीं, लेकिन क्यूँ देवी?"-सुनील नकली हैरानी का इजहार करते हुए बोला-"अभी तो तूने कबूल किया कि, अपन इतने य्ये बड़े वाले जासूस हैं ! फिर और क्या चाहिए तुझे?"
सुनील की नकली हैरानी पर पूजा हँसते हुए बोली-"मैं तो ऐसे लड़के से शादी करूंगी, जो शाहरूख जितना हैंडसम हो, अक्षय कुमार की तरह फाइटर हो, सुनील शेट्टी के जैसी उसकी बॉडी हो, गोविंदा के जैसा डांसर हो, अमिताभ बच्चन जितना लंबा हो, और रितिक रौशन के जैसा मासूम हो !"
"ताकि तू उसे आसानी से उल्लू बना सके!"
पूजा अपनी धुन में बोले जा रही थी–"सन्नी देओल जैसी उसकी बुलंद आवाज हो, अजय देवगण जैसी उसकी हेयर-स्टाइल हो, लक्ष्मीनिवास मित्तल के जैसा रइस हो, रजनीकांत के जैसा..!"
"बस-बस"-झुंझलाते हुए सुनील बोला-"मैं समझ गया ! तू रेखा के जैसी जिन्दगी भर कुँआरी रहेगी !"
"क्यूँ भला?"
"अरी बावरी, भला सृष्टी में तुझे ऐसा लड़का कहाँ से मिलेगा, जिसमें एक साथ इतने सारे गुण मौजूद हों?"
सोंचने का अभिनय करते हुए पूजा बोली-"एक उपाय है ! मैं एक-एक करके उन सबसे शादी कर लेती हूँ !"
"जय बजरंग बली"-सुनील ने यूँ बुरा सा मुँह बनाया, जैसे उसके मुँह में नीम की छाल का रस भर गया हो-"पता नहीं किस-किस से शादी करती फिरेगी ! वैसे मुझे क्या, तू कहीं भी जाकर मर !"
पूजा होंठ दबा कर हँसी-"हुज़ूर को पाठक साहब ने बुलाया था, और हुजूर उनके हुजूर मे पेश होने की बजाय अभी तक यहीं हैं !"
"अरे हाँ डार्लिंग !"

सुनील तत्काल पाठक साहब के ऑफिस की ओर लपका ! जाते-जाते वह बोल के गया-“वापस आकर खबर लेता हूँ तेरी !”
पूजा उन्मुक्त भाव से हँसते हुए सुनील को जाते देखती रही !

[] [] []

धीरे से दरवाजे को ठेल कर सुनील पाठक साहब के विशाल एअर-कंडीशंड ऑफिस में प्रविष्ट हुआ !
तकरीबन साठ के लपेटे में पहुँचे पाठक साहब सर्वोच्च भारतीय इंटेलीजेंस ब्यूरो रॉ के वर्तमान चीफ थे ! इस समय वे अपने आलीशान ऑफिस की बड़ी सी शानदार मेज के पीछे अपनी रिवॉल्विंग चेअर पर बैठे किसी फाइल का अवलोकन कर रहे थे ! आहट पाकर उन्होंने फाईल पर से सिर ऊपर उठाया !
सुनील ने पहले अदब के साथ उनका अभिवादन किया ! जवाब में उन्होंने हौले से सिर हिलाया !
"कहिए सर"-सुनील बोला-“किसके घर के दरवाजे पर से भैंस खोल के लानी है?"
पाठक साहब ने घूर कर सुनील को देखा ! जवाब में सुनील डरने का अभिनय करते हुए एकदम तन कर सावधान की मुद्रा में इस तरह सीधा खड़ा हो गया, जैसे कोई ट्रेंड फौजी जवान अपने कमांडर के सामने खड़ा होता है !
पाठक साहब के होंठों पर एक हल्की-सी मुस्कुराहट उभरी, जिसे उन्होंने बड़े यत्न-पूर्वक अपनी मुँछों के पीछे छुपा लिया ! फिर धीरे से बोले-"बैठो !"
सुनील सामने पड़ी विजिटर्स चेयर्स में से एक पर पसर गया !
“आपने बुलाया सर?”-सुनील ने पूछा !
"हाँ..क्या कर रहे थे अभी?"
"काम कर रहा था सर !"
“क्या काम कर रहे थे?"
“आपके किसी नये आदेश का, किसी नये केस को हाथ में लेने के ऑर्डर का इंतजार कर रहा था !"
ब्यंग्य-पूर्ण स्वर में पाठक साहब बोले-“ये भी कोई काम है?”
"बिल्कुल सर, ये भी एक काम है ! जो कि मैं एकदम फ्री में करता हूँ ! जिसकी मैं कभी भी सरकार से एक्सट्रा पगार नहीं मांगता !"
पाठक साहब ने फिर सुनील को घूर कर देखा ! जवाब में सुनील उनसे नजर मिलाने की बजाय जेब से अपना मोबाइल निकाल कर देखने लगा ! प्रतिक्रिया में पाठक साहब ने असहाय भाव से सिर हिलाया ! फिर वे गम्भीर स्वर में बोले-"तुम मेरे एक सवाल का जवाब दो !”
“दो पूछिए सर!”-सुनील तत्पर स्वर बोला !

सीधे-सीधे पाठक साहब ने सवाल किया-"तुम भूत-प्रेत या आत्माओं के अस्तित्व पर विश्वास करते हो?"
“आँय”-सुनील अचकचाया-“ये क्या सवाल हुआ हुजूर? कहीं आपको विक्रम भट्ट की हॉरर फिल्में देखने का चस्का तो नहीं लग गया?"
"जो पूछा है, उसका जवाब दो !"
“सर, आजकल के साइंस के जमाने में वही आदमी भूत-प्रेतों पर विश्वास करेगा, जिसका दिमाग पहले से हिला हुआ होगा!"
जिद करते हुए पाठक साहब बोले-"जवाब शांत दिमाग से ये सोंच करके दो कि आज की साइंस भी भटकती हुई आत्माओं के अस्तित्व को स्वीकार करती है ! हमारे सनातन धर्म-ग्रंथों के मुताबिक इस ब्रह्माण्ड मे मौजूद चौरासी लाख योनियों में से एक प्रेत योनि भी है ! जिसकी बावत ये प्रमाणित किया जा चुका है कि अकाल मौत मरे हुए लोगों की अ-तृप्त आत्मायें अपनी एक निश्चित आयु के पूरी होने तक इस मृत्यु-लोक में भटकती रहती है !"
"सर"-सुनील ने पाठक साहब के चेहरे को ध्यान से देखा-“आपकी बातों से तो ऐसा लगता है कि आप खुद भी भूत-प्रेतों पर विश्वास रखते हैं !”
"बिल्कुल नहीं, मुझे भूत-प्रेतों पर जरा भी विश्वास नहीं है ! लेकिन कभी-कभी हमारे इर्द-गिर्द कुछ ऐसी विचित्र घटनायें घट जाया करती है ! कुछ ऐसे अजीबो-गरीब वाक्यात देखने को मिल जाते हैं ! जिन्हें देख कर ये पक्का यकीन हो जाता है कि प्रस्तुत कारनामा किसी आदम-जात का हो हीं नहीं सकता !"
“ऐसी कौन सी घटना घट गई है हुजूर?"
जवाब देने से पहले पाठक साहब ने टेबल पर सामने पड़ा गोल्ड-फ्लैक का पैकेट उठाया ! पैकेट में से एक सिगरेट निकाल कर अपने होंठों में फँसाया ! लाइटर से होंठों में फँसी सिगरेट सुलगाई, और सिगरेट का एक गहरा भरपूर कश लगाया ! नाक से धुँयें की दोनाली छोड़ी... तृप्ति-पूर्ण भाव से जीभ चटकायी, फिर बोले-"एक हत्या हो गई है !"
"तो क्या हत्या कोई इंसान नहीं कर सकता?”
“उस तरीके से तो बिल्कुल नहीं कर सकता, जिस तरीके से हत्या हुई है !”
बातों में दिलचस्पी लेते हुए सुनील ने पूछा-"किस तरीके से हुई है हुजूर? कहाँ और किसकी हुई है? जरा डिटेल में पूरा खुलासा करके बताने की जहमत उठाइए !"
“वही बता रहा हूँ ! सुनते रहो ! बीच में मत टोको !"
"सॉरी बताइये !"
एक बार फिर से पाठक साहब ने सिगरेट का कश लगाया ! नाक से धुआँ फेंका, फिर बताना शुरू किया–"नोएडा सेक्टर 49 में हैरीटेज हॉस्टल के नाम से एक गर्ल्स हॉस्टल है ! हॉस्टल का मालिक कुलभूषण यादव मेरे कॉलेज के जमाने का करीबी दोस्त है ! हत्या उसी के

हॉस्टल में हुई है ! हॉस्टल के एक कमरे में शीतल राजपूत नाम की एक लड़की की हत्या हुई है ! और जिस तरीके से हत्या हुई है, वो काम किसी इंसान का हो हीं नहीं सकता !"
"किस तरीके से हुई है?"-सुनील ने फिर पूछा !
"कातिल ने शीतल राजपुत नाम की उस लड़की का सिर काट कर कमरे में मौजूद बेड-साइड टेबल पर रख दिया था ! उसके हाथ-पैर इत्यादि काट-काट कर कमरे में ही अलग-अलग जगहों पर सजा कर रख दिए गए थे ! चारों तरफ कमरे की दीवारों पर खून के छींटे बिखरे हुए थे ! और.. और कातिल ने फर्श पर बिखरे उसके खून को उफ्फ... यूँ चाटा था, जैसे कोई रक्त-पिपासु शैतान चाटता है !"
सुन कर सुनील के रोंगटे खड़े हो गए, फिर भी वह अपनी उसी सदाबहार टोन में बोला-"लेकिन हुजूर, सिर्फ इतने से ही ये कैसे साबित हो जाता है कि ये काला कारनामा किसी इंसान का किया-धरा नहीं था?"
"बता रहा हूँ, सुनते रहो ! कुछ ऐसी खास बातें और घटना-स्थल की स्थिति ये इशारा करते हैं कि वो कारनामा यकीनन किसी शैतान का हीं था!"
"बताईए !"
"सुनो, पहली बात तो ये है कि जिस कमरे में हत्या हुई है, वहाँ घटना-स्थल पर बिखरा हुआ खून यूँ चाटा गया था, जैसे कोई रक्त-पिपासु-शैतान हीं चाट सकता था ! दूसरी बात, कमरे में मौका-ए-वारदात पर से फिंगरप्रिंट एक्सपर्ट को सिवाय मकतूला शीतल के फिंगर-प्रिंट और फुट-मार्क्स को छोड़ कर बाकी किसी भी दुसरे आदमी के फिंगर-प्रिंटस या फुट-मार्क्स नहीं मिले !"
"अरे"-अचरज भरे स्वर में सुनील बोला-"सर, भला ऐसा कैसे हो सकता है? कातिल अगर कितनी भी होशियारी से कमरे में घुसता, याद कर-करके हर जगह से अपने फिंगर-प्रिंटस और फुट-मार्क्स मिटाता, तो भी कहीं न कहीं छूट हीं जाता ! जो फिंगर-प्रिट एक्सपर्ट को जरूर नजर आ जाता !"
"और वो काला कारनामा किसी शैतान का हीं था ! इस बात को बल देने वाली जो सबसे मुख्य बात है, वो सुनो ! जिस वक्त लाश बरामद की गई थी, उस वक्त तक कमरे का दरवाजा पूरी मजबूती के साथ अंदर से बंद था ! बकौल कुलभुषण जब सुबह के आठ बजे तक भी शीतल के कमरे का दरवाजा नहीं खुला, तब बाजू के कमरे वाली लड़की ने दरवाजा पीटा ! अंदर से कोई जवाब न मिलने पर उसने जाकर सबको इस बावत सूचना दी ! किसी ने पुलिस को खबर कर दी ! पुलिस ने खुद आकर जब कमरे का दरवाजा तोड़ा, तो कमरे में शीतल की छिन्न-भिन्न, अंग-भंग हो चुकी लाश इधर-उधर बिखरी पड़ी थी !"
"कमरे की खिड़की वगैरह?"
"कमरे की एक मात्र खिड़की तब खुली थी ! लेकिन खिड़की में लोहे की मोटी-मोटी सलाखें लगी हुई थीं, जिसमें से होकर कोई इंसान तो क्या कोई बिल्ली का बच्चा भी अंदर-बाहर

नहीं हो सकता था !”
घोर आश्चर्य के साथ सुनील बोला-"लेकिन भला ऐसा कैसे हो सकता है? कत्ल करने के बाद कातिल अंदर से बाहर बिना दरवाजा खोले कैसे निकल गया? इस तरह से तो बगैर दरवाजा खोले ताले के छेद से, खिड़की से भूत-प्रेत हीं अंदर-बाहर हो सकते हैं !"
"हत्या का ऐसा विचित्र केस देख कर इस मामले की जाँच कर रही पुलिस का भी दिमाग कुंद होकर रह गया है ! उन लोगों ने भी ये मान लिया है कि ये सारा किया-धरा किसी भूत-प्रेत का है ! अब ऐसे में भला वे केस क्या हल कर पाएंगे!”
"यकीनन नहीं कर पाएंगे”-सुनील बोला-“लेकिन हुजूर, हम लोग इस केस में कहाँ फिट होते है?"
"हॉस्टल में हुई उस अजीबो-गरीब पिशाच-लीला के कारण उसका वो हॉस्टल बंद होने के कगार पर है ! पुलिस और हॉस्टल की भारी बदनामी हो रही है ! मेरे मित्र कुलभूषण ने मुझे फोन करके मुझसे रिक्वेस्ट की है कि अगर तुम्हारे हाथों- प्राईवेट डिटेक्टिव सुनील के हाथों उस अजीबो-गरीब कत्ल के रहस्य पर से पर्दा उठ जाता तो उसका वह हॉस्टल बदनाम और बंद होने से बच जाता !"
"लेकिन सर”-सुनील बोला-"अगर लोकल पुलिस इस केस को हल नहीं कर सकती, तो ये केस आगे सी.बी.आई को सौंपा जा सकता था ! वे देख लेते.. अंतराष्ट्रीय केसेज की जगह रॉ अब इस तरह के छोटे-मोटे मर्डर केस देखेगी?”
पाठक साहब ने अपनी सिगरेट खत्म करके उसे टेबल पर रखे ऐश-ट्रे में मसल कर बुझाया ! फिर गंभीर स्वर में बोले-"शुरू में मैंने भी यही सोंचा था कि ये केस रॉ के स्तर का नहीं है ! अपने मित्र के कहने पर उस मामले की तहकीकात के लिए मैं बतौर प्राइवेट-डिटेक्टिव तुमको लगा देता ! लेकिन आज हमें गृह-मंत्रालय से ये निर्देश मिला है कि, इस मामले में किसी विदेशी मुल्क की गुप्तचर एजेंसी का कोई एजेंट इन्वॉल्व हो सकता है ! विश्वसनीय सूत्रों के हवाले से मिली जानकारी के बेस पर गृह मंत्रालय ने ये शंका जताई है कि, कई सालों से दिल्ली में आई.एस.आई. के एजेंट सक्रिय हैं ! अत: रॉ इस मामले को खुद देखते हुए अपने स्तर से जाँच करे ! वैसे इन्वेस्टिगेशन के दरम्यान तुम हमेशा की तरह पब्लिक में खुद को प्राईवेट डिटेक्टिव हीं शो करोगे !"
"ओके सर, मैं आज हीं सिर धोकर सॉरी .. मेरा मतलब है कि हाथ धोकर इस केस के पीछे पड़ जाता हूँ !"
सुनील की चुहलबाजी पर पाठक साहब मुस्कुरा उठे !

[] [] []

रॉ ज्वॉयन करने से पहले सुनील एक प्राईवेट डिटेक्टिव एजेंसी का मालिक हुआ करता था ! अपनी विशेष अक्लमंदी और काबिलियत के दम पर सुनील ने कुछ ऐसे जटिल केसों को हल करके दिखाया था, जिससे रातों-रात वह फेमस हो गया था !

उसी दरम्यान तब पाठक साहब की निगाह सुनील पर पड़ी ! और उन्होंने एक एजेंट के माध्यम से सुनील को वॉच करना शुरू कर दिया ! सुनील पर लगभग एक साल निगाह रखने के बाद उन्हें ये महसूस हुआ कि, असल मे सुनील जैसा हीरा रॉ के पास होना चाहिए था !
सो उन्होंने गृह-मंत्रालय और पी.एम.ओ. से सिफारिश करके सुनील को बतौर एक सीनियर एजेंट रॉ ज्वायन कराके पद और गोपनीयता की शपथ दिलवा दी थी ! ये थी सुनील के रॉ ज्वायन करने की कहानी..
अपनी लाईफ की तीस दिवाली देख चुके सुनील ने अभी तक शादी नहीं की थी ! क्योंकि रॉ ज्वायन करने के बाद उसे ये महसूस हुआ था कि, शादी कर लेने के बाद कोई भी आदमी अपनी पूर्ण क्षमताओं के साथ देश की सेवा नहीं कर सकता ! और इस नौकरी में कदम-कदम पर खतरा भी था ! किसी भी दिन किसी दुश्मन मुल्क के एजेंट की गोली का वो शिकार हो सकता था ! अतः अंत में उसने शादी नहीं करने का हीं फैसला किया था ! सुनील के माता-पिता विश्वनाथ सिंह और रमा देवी चाहते थे कि, अब बेटे की शादी करके अपनी अंतिम जिम्मेदारी से वे मुक्त हो जायें ! लेकिन सुनील भला उन्हें ये कैसे बता सकता था कि, वह अपनी पूरी जिंदगी अपने वतन के नाम कर चुका था ! सो वह हमेशा उन लोगों की बात को टाल दिया करता था !
लेकिन एक दिन सुनील की माँ रमा देवी जिद पर अड़ गई कि, उसे शादी के लिए हाँ करनी हीं पड़ेगी !
सुनील ने अपनी बुढ़ी माँ रमादेवी को बहुत समझाया, लेकिन वो टस से मस न हुई ! उल्टे उन्होने दुखी होकर खाना-पीना त्याग दिया ! सुनील के लिए तब ये एक बड़ी हीं धर्म-संकट वाली स्थिति पैदा हो गई थी ! वह दो-दो माँओं के बीच धर्म-संकट में फँस गया था !
एक तरफ थी उसको जन्म देने वाली माँ, जिसके हर सुख-दुख का ख्याल रखना व उसका हर एक आदेश मानना उसका परम-कर्तव्य था !
तो दूसरी तरफ थी वो माँ भारती, जिसकी मिट्टी में वो पैदा हुआ था ! उसका रोम-रोम जिसका कर्जदार था ! और जिसकी रक्षा करने की, अपने खून की आखिरी बूंद भी जिसके लिए कुर्बान कर देने की उसने रॉ ज्वायन करते समय कसम खाई थी ! अब वो इस धर्म-संकट में फँसे ये समझ नहीं पा रहा था कि, वो किस माँ का फर्ज़ अदा करे ! उसकी किसी एक माँ के फर्ज निभाने की सूरत में दूसरी माँ के साथ अन्याय हो जाता !
तब सुनील ने एक काम किया ! जिससे उसकी माँ रमादेवी भी खुश हो जाती, और उसकी दूसरी माँ भारती के साथ अन्याय भी न होता !
उसने रॉ की एकमात्र लेडी एजेंट पूजा के साथ मिल कर अपने माँ-बाप से ये झूठ बोला कि, हमलोग फलाँ जगह मिले और वहीं पर शादी भी कर ली है !
उसके पैरेंट्स को थोड़ी सी नाराजगी हुई कि, हमें बिना बताए शादी कर ली ! पर पूजा को बहू के रूप में देख कर वे खुश हो गए !

हाँलाकि पूजा अपनी तरफ से सुनील से बहुत प्यार करती थी, और ये चाहती थी कि सुनील उसे सचमुच की पत्नी बना ले ! पर सुनील हमेशा उसे मना कर देता था ! और उसके साथ अपने सहकर्मी जैसा ही बर्ताव करता था !
पाठक साहब के ऑफिस से निकल कर सुनील पूजा की सीट के पास पहुँचा ! पूजा अपनी किसी फाईल में बिजी थी ! आहट पाकर उसने सिर ऊपर उठाया ! और सुनील की तरफ देखा !
सुनील किसी रियासत के राजा-महाराजा की तरह शान से सीना फुलाए ठीक उसके सामने खड़ा था !
पूजा ने चुहलबाजी की-"लग रहा है कि जनाब का प्रमोशन हो गया, और उस बूढ़े पाठक साहब की जगह पर अब जनाब विराजमान होंगे!"
सुनील ने बुरा सा मुँह बनाया-"क्या मेरे बाल पाठक साहब के जैसे सफेद हो गए मेरी जाऩ कि मैं उनकी जगह पर बैठ कर कुर्सी तोड़ूंगा !"
"फिर क्या बात हुई? बहुत देर तक मीटिंग हुई तुम्हारी उनके साथ?"
सुनील ने फिर सारा किस्सा पूजा के सामने बयान किया !
केस के बारे में सुन कर पूजा भी हैरान रह गई-"उफ्फ.. इतना वहशीपन... जरुर वो कोई शैतान हीं होगा !"
"देख लेंगे देवी"-सुनील बोला-"अभी मैं विक्रम को साथ लेकर मौका-ए-वारदात पर जा रहा हूँ !"
तत्काल पूजा बोली-"रुको, मैं भी तुम लोगों के साथ चलती हूँ !"
"नहीं देवी, अभी तुम यहीं रुको ! जरूरत हुई तो तुम्हे भी जरूर कष्ट देंगे ! तब तक तुम आराम से यहीं बैठ कर कुर्सी तोड़ती रहो, ओठलाली लगाती रहो !"
पूजा आँखें तरेरती हुई कसमसा कर फिर वापस अपनी सीट पर बैठ गई !
सुनील तेजी से वहाँ से निकलने लगा ! पीछे से पूजा ने आवाज लगाई-"आते समय मेरे लिए चटनी और समोसे लेते आना!"

[] [] []

विक्रम रॉ का एक जूनियर एजेंट था, जिसे लेकर सुनील नोऐडा सेक्टर 49 में हैरीटेज हॉस्टल पहुँचा ! अपनी ब्लू कलर की 647 हॉर्स-पावर के शक्तिशाली इंजन वाली फोर्ड जी.टी. कंपनी की अमेरिकन कार उसने हॉस्टल के गेट पर हीं रोक दी ! और विक्रम के साथ पैदल हीं हॉस्टल के कंपाउंड में दाखिल हुआ ! तब सुनील ने ये गौर किया कि उस वक्त हॉस्टल के कम्पाउंड और हॉस्टल में मरघट के जैसा सन्नाटा व्याप्त था ! और वहाँ के उस भयानक सन्नाटे में सड़क पर भौंक रहे कुछ आवारा कुत्ते माहौल को और भी ज्यादा भयानक बना रहे थे !

वहाँ कहीं कोई आदमी का बच्चा नहीं था ! सिवाय उस हवलदार के, जो पहरेदारी के लिए दरवाजे पर कुर्सी डाले उस पर बैठा ऊँघ रहा था !
दो जोड़ी कदमों की आहट सुन कर उसने पट से अपनी आँखें खोल दी ! जब तक वह उठ कर खड़ा हो पाता, सुनील और विक्रम दोनों उसके सिर पर पहुँच चुके थे ! हवलदार उठ कर खड़ा हुआ ! उसने एक निगाह गेट पर खड़ी कार फिर सुनील पर डाली ! ये सुनील की पर्सनैलिटी का रौब हीं था कि, हवलदार ने सम्मान सहित उसे एक जोरदार सैल्यूट मारा !
"सुनील कुमार"-सुनील उसे अपना गलत परिचय देते हुए बोला-"फ्रॉम स्पेशल क्राईम ब्रांच दिल्ली!"
"यस सर!"-हवलदार सावधान की मुद्रा में तन कर खड़ा हो गया !
"क्या नाम है तुम्हारा?"–सुनील ने बा-रौब हवलदार से पूछा !
"जी..दयाराम!"-हवलदार ने जवाब दिया !
"हाँ तो दयाराम"-सुनील अधिकार-पूर्ण स्वर में हवलदार से बोला–"मैं इस हॉस्टल में हुई कत्ल की तफ्शीश के सिलसिले में यहाँ आया हूँ ! और जरा एक बार मैं मौका-ए-वारदात वाले कमरे में एक निगाह डालना चाहता हूँ!"
हवलदार हिचकिचाया, पर वो सुनील को ना न बोल सका-"सर..आप वहाँ मौजूद किसी भी चीज के साथ छेड़-छाड़ तो नहीं करेंगे?"
"जरूर करूंगा"-सुनील ने उसे एक मीठी झिड़की दी–"मैं उस सिर कटी लड़की की गाल में एक चुम्मा लूंगा!"
"ही..ही..ही"-दयाराम हँसा-"अरे साब आप भी मजाक कर रहे हैं!"
"और नहीं तो क्या, मैं तुम्हे इतना अनाड़ी दिखता हूँ प्यारे कि मौका-ए-वारदात वाली प्लेस पर उल्टा सीधा काम करूंगा?"
सहमति में सिर हिलाते हुए हवलदार आगे बढ़ा ! सुनील और विक्रम उसके पीछे हो लिए ! दोनों को लेकर हवलदार अंदर एक बंद दरवाजे वाले कमरे के सामने रुका ! जेब से चाबी निकाल कर उस कमरे का दरवाजा खोला, और सुनील और विक्रम को अंदर जाने का इशारा किया ! उस खुले हुए दरवाजे से सुनील विक्रम के साथ अंदर कमरे में घुसा ! और कमरे में घुसते हीं जिस दृश्य पर उसकी निगाह पड़ी, उसे देख कर सुनील जैसे महा-खतरनाक रॉ एजेंट के भी तिरपन काँप गए !
अंदर कमरे का दृश्य हीं कुछ ऐसा था !
उसे बताये गए ढंग के मुताबिक लाश का सिर धड़ से अलग अभी भी वैसे हीं टेबल पर रखा हुआ था ! शरीर के बाकी सारे अंग जैसे हाथ-पैर आदि को अलग-अलग जगहों पर सजा कर रखा गया था ! और फर्श पर इधर-उधर बिखरा खून उफ्फ ... ठीक उसी तरह चाटा गया था, जैसे खून का प्यासा कोई रक्त-पिपासु शैतान हीं चाट सकता था ! लाश की वो हालत देख कर सुनील को उबकाई सी आने लगी ! कमरे की दीवारों पर जहाँ-तहाँ खून के

छींटे पड़े हुए थे ! जैसे किसी शैतान ने छींट-छींट कर खून पिया हो ! बहुत जब्त करते हुए और हिम्मत बाँध कर सुनील टेबल पर मौजूद कटे हुए सिर के पास पहुँचा ! बिना हाथ लगाए उसने गौर से सिर का मुआयना किया ! लड़की हद से ज्यादा हीं खूबसूरत थी ! लेकिन चेहरे से सारा खून बह जाने के कारण उसका वो सुंदर सा चेहरा अब थोड़ा काला और निस्तेज दिखाई दे रहा था ! गले के कटे हुए भाग पर देखने से साफ पता चल रहा था कि, गरदन पर वार किसी बहुत हीं तीक्ष्ण और धारदार वैपन से किया गया था ! किसी क्लू की तलाश में सुनील ने एक बार पूरे कमरे में निगाह दौड़ाई ! मगर उसे वैसा कोई क्लू नजर न आया ! एक बात और उसने गौर की ! सारा कमरा एकदम से कबाड़-खाना बना हुआ था ! कमरे का पूरा सामान इधर-उधर बिखरा पड़ा था ! स्पष्ट था कि मरते दम तक मकतूला ने अपनी मौत से, कातिल से जी भर कर संघर्ष किया था ! बहुत ध्यान देने के बावजूद भी उसे अपने काम की कोई चीज नजर न आई ! सो सुनील ने विक्रम को इशारा किया ! सुनील के निर्देश पर विक्रम ने लाश के सिर और धड़ की अलग-अलग एंगल से तस्वीरें खींची !
तस्वीरें खींचने के बाद दोनों कमरे के फर्श पर से अपने फुट-मार्क्स मिटा कर बाहर निकल गए !
बाहर मुख्य दरवाजे पर हवलदार दयाराम अटेंशन की मुद्रा में मुस्तैद खड़ा था !
"हो गया मुआयना साब?"-सुनील को देख कर उसने पूछा !
"हाँ प्यारे, हो गया !"
"लाश देखी आपने?"
"बिल्कुल देखी भैया .. और देख कर ये सोंच रहा हूँ कि कातिल महोदय कोई कसाई ही रहे होंगे, तभी तो उसने बकरे के मटन की तरह लाश के टुकड़े-टुकड़े कर दिए हैं ! बड़े ही अफसोस की बात है कि, ऐसा दुर्दान्त कातिल अभी तक पुलिस की पकड़ से बाहर है!"
"पुलिस उसे नहीं पकड़ सकेगी!"-पूरे विश्वास के साथ हवलदार बोला !
"क्यों भला?"
"अरे साहब"-सुनील के बेहद करीब पहुँच कर एकदम से धीरे-धीरे राजदराना लहजे में हवलदार बोला-"भूत-प्रेत को भी भला कोई पकड़ सकता है क्या?"
"भूत-प्रेत?"-सुनील सकपकाया !
"और नहीं तो क्या इस तरह चमत्कारिक तरीके से भला कोई इंसान कत्ल कैसे कर सकता है?"
"तो तुम भी यही समझ रहे हो प्यारे कि ये कत्ल किसी भूत-प्रेत ने किया है?"
"मेरी समझ को गोली मारिए साहब .. मौका–ए-वारदात की स्थिति चीख-चीख कर कह रही है कि, ये काला कारनामा किसी शैतान का ही है ! जरा सोंचिए, लाश के इस तरह से टुकड़े-टुकड़े कोई इंसान तो कर सकता है, लेकिन फर्श पर बिखरा वो खून कोई इंसान चाट सकता है क्या? और चलिए ये भी मान लिया कि, कोई राक्षसी स्वभाव का आदमी खून भी चाट

सकता है ! लेकिन कत्ल कर चुकने के बाद कोई बिना दरवाजा खोले अंदर से बाहर कैसे निकल सकता है?"
सुनील ने हवलदार की बात का विरोध न किया ! हवलदार की बात तर्क-पूर्ण और वजनदार थी !
"मौका-ए-वारदात का मुआयना करने के बाद पुलिस को और कुछ नयी बात मालूम हुई?"
"कुछ हाथ नहीं लगा पुलिस को, यहाँ तक कि कमरे से कातिल के फिंगर-प्रिंटस और फुट-मार्क्स तक नहीं मिले ! सिवाय आला-ए-कत्ल के!"
"आला-ए-कत्ल"-तत्काल सुनील के कान खड़े हुए-"यानी कि मर्डर-वैपन!"
"हाँ"-हवलदार ने बताया-"वो माँस दुकान पर कसाइयों द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली माँस काटने की एक लंबी और तेज धारदार छुरी थी, जो पुलिस को कमरे के ही एक कोने में खड़ी रखी हुई मिली थी!"
"छुरी पर से कुछ फिंगर-प्रिंटस तो नहीं ही मिले होंगे प्यारे?"
"अरे साहब छुरी पर से भला फिंगर-प्रिंटस कैसे मिलती?"
"क्यों प्यारे?"
"साहब"-बताते समय हवलदार के शरीर ने एक झुरझुरी सी ली-"छुरी और छुरी के मूठ पर लगा हुआ खून भी किसी भूत-पिशाच की तरह चाटा गया था ! फिर सोचिए, छुरी पर भला फिंगर-प्रिंटस कैसे मिलते?"
सुनील ने सवाल किया-"ऐसे भुतहा माहौल में लाश के साथ क्या तुम्हे डर नहीं लग रहा प्यारे?"
हवलदार धीरे से बोला-"लगता तो है साब, लेकिन नौकरी तो करनी ही पड़ती है ! जाँच के समय मोर्चरी की वैन उपलब्ध नहीं थी ! अब जब तक वैन नहीं आती, रहना पड़ेगा ! डर लगता है तो हनुमान चालीसा पढ़ लेता हूँ ! डर ऐसे भाग जाता है, जैसे गुड-नाईट लगाने से मच्छर भाग जाते हैं!"
"छुरी को पुलिस अपने साथ लेकर गई?"
"हाँ सर, छुरी को टेस्ट के लिए लेबोरेटरी भेंजना था... इसीलिए?"
"ठीक है भई"-सुनील बोला-"अब हम लोग चलते हैं!"
हवलदार ने सहमति में सिर हिलाया !

[] [] []

वहाँ से निकलने के बाद सुनील मामले की जाँच कर रहे वहाँ के नजदीकी पुलिस-चौकी पहुँचा ! थाने के कंपाउंड में अपनी गाड़ी खड़ा करके वो इंस्पेक्टर के ऑफिस में पहुँचा !
जाँच-अधिकारी इंस्पेक्टर शिवशंकर शर्मा, जो उसे पहचानता था, अपने ऑफिस में हीं बैठा हुआ था ! जिस वक्त सुनील उसके ऑफिस में घुसा, वो परेशान-हाल माथा पकड़े अपनी कुर्सी पर बैठा था !

"क्या हुआ शिवशंकर कैलाशपति"-सुनील ने नारा सा लगाया–"क्यो परेशान हो भैया, अपनी पार्वती से झगड़ा कर लिए क्या?"
सुनील को देख कर इंस्पेक्टर शिवशंकर शर्मा थोड़ा नार्मल हुआ ! सुनील और विक्रम से हाथ मिला कर उसने दोनों को बैठने के लिए कुर्सी पेश की !
विक्रम ने देखा ! इंस्पेक्टर शिवशंकर शर्मा तकरीबन तीस-बतीस साल का कसरती और दोहरे जिस्म का सुरत से समझदार दिखने वाला एक नौजवान था !
सुनील और विक्रम के बैठ चुकने के बाद इंस्पेक्टर बोला-"कहिए मिस्टर सुनील, क्या मंगाउँ?"
"शुक्रिया प्यारे"-सुनील बोला-"तुम सिर्फ हैरीटेज हॉस्टल हत्याकांड के बारे में कुछ बताओ !"
हैरीटेज हॉस्टल हत्याकांड का नाम सुन कर इंस्पेक्टर तत्काल गंभीर हो गया ! धीरे से वह बोला-"क्या जानना चाहते हैं उस केस के बारे में?"
"वही जो तुमको मालूम है!"
दोनों हाथों से अपना सिर पकड़ कर थके-थके से स्वर में इंस्पेक्टर शिवशंकर बोला–"बड़े अफसोस और शर्मिंदगी के साथ हमें कहना पड़ रहा है कि इस केस ने मेरा सिर घुमा कर रख दिया है ! और सच पूछिए तो ऐसा विचित्र केस मैंने आज तक देखा भी नहीं!"
"फिर भी वही बताओ, जो तुम्हें मालूम है !"
जवाब में इंस्पेक्टर ने वही सब कुछ बता दिया, जो सुनील पहले हीं पाठक साहब से सुन चुका था !
पूरी बात सुन कर सुनील ने सवाल किया-"मर्डर-वैपन का क्या किस्सा है?"
"वो माँस दुकान में कसाइयों द्वारा यूज की जाने वाली माँस काटने की लंबी, वजनदार और बेहद धारदार छुरी थी ! छुरी पर लगा हुआ खून जीभ से चाटा गया था ! सो उस पर से फिंगर-प्रिंटस मिलने का तो सवाल ही नहीं था ! तब जाँच के लिए मैंने वो छुरी लेबोरेटरी भिंजवा दी थी ! फिल्हाल रिपोर्ट अभी नहीं आई है!"
"जैसा कि बहुत से लोगों का मानना है कि ये खूनी खेल किसी इंसान का करामात नही, बल्कि एक पिशाच-लीला थी ! इस बारे में क्या सोंचते हो?"
बहुत सोंच-विचार कर गंभीरता-पूर्वक इंस्पेक्टर ने जवाब दिया-"देखिए, आत्माओ के अस्तित्व को तो साईंस भी स्वीकार करता है ! साइंटिस्ट ये प्रमाणित कर भी चुके हैं कि आत्मा नाम की चीज यकीनन इस दुनिया में मौजूद है ! अगर किसी इंसान की समय से पहले ही अकाल मृत्यु हो जाती है, तो उसकी आत्मा को उसके आगामी स्थान पर जगह नहीं मिलती ! और अपने आयु के पूर्ण होने तक वो इधर-उधर भटकती फिरती है ! लेकिन जहाँ तक इस केस का सवाल है, तो अभी कुछ कहना जल्दबाजी होगी!"
"मतलब?"

“मतलब ये कि अगर कुछ बातें ये इशारा करती हैं कि ये कत्ल कोई पिशाच-लीला थी ! तो वहीं कुछ प्वायंटस ऐसे भी हैं, जो ये इंडिकेट करते है कि ये कत्ल किसी भूत-प्रेत ने नहीं बल्कि किसी नश्वर इंसान ने की है !"
"कौन से प्वायंटस प्यारे?"-सुनील ने पूछा!
"सुनिए, पहली बात तो ये है कि भूत-प्रेत किसी इंसान के स्थूल सरीर में प्रवेश किए बिना किसी जिंदा इंसान का कुछ नही बिगाड़ सकते ! सिर्फ मेंटली हैरासमेंट कर सकते हैं ! वे तो ऐसे हीं किसी के सामने जाकर खड़े हो जायें, तो आदमी का हार्ट फेल हो जाए ! जबकि उस कमरे मे कोई भी स्थूल सरीर-धारी नहीं घुसा था ! और दूसरी बात, वो हॉस्टल पहले से हंटेड नहीं था ! हाँ मौका-ऐ-वारदात की स्थिति और वहाँ मिले सबूत ये जरूर इशारा कर रहे थे कि वो कोई पिशाच-लीला ही थी !"
“लेकिन कैलाशपति मौका-ए-वारदात पर सबूत प्लांट भी किए जा सकते हैं ! मौका-ए-वारदात की स्थिती अपने हिसाब से क्रियेट भी किया जा सकता है !"
"लेकिन क्यों?"
"ताकि इन्वेस्टीगेटर धोखा खा जाए ! इसे पिशाच-लीला समझ कर केस क्लोज कर दे, और कातिल साफ बच निकले !"
"तो”-ईस्पेक्टर शिवशंकर बोला-"आप ये मानते हैं कि ये काला कारनामा किसी घुटे हुए राक्षसी प्रवृति के विकृत अपराधी का था !"
"’बेशक प्यारे..केस से सबंधित और कुछ महत्वपूर्ण बात?"
"और कुछ बात तो पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद ही पता चल सकती है ! शाम तक मोर्चरी की वैन आकर लाश ले जाएगी ! तो रिपोर्ट कल शाम तक मिलने की उम्मीद है !"
"तो फिर चलो वत्स”-सुनील बोला-“अब हम यहाँ से अंर्तध्यान होते हैं ! जरूरत पड़ी तो हमें सच्चे हृदय से पुकारना … हम तुम्हारे सामने प्रकट हो जाएंगे !"
सुनील की शैली पर शिवशंकर मुस्कुराए बिना न रह सका !

[] [] []

शाम हो चला था ! तब कहीं जाने का समय न था ! सो सुनील अपने ऑफिस पहुँचा ! पूजा अपनी सीट पर बैठी हुई थी ! और अब वो घर जाने की तैयारी में बैग से कंघी निकाल कर अपने केश सँवार रही थी !
बिल्ली की तरह दबे पाँव सुनील उसके एकदम पीछे जा कर खड़ा हो गया !
आहट सुन कर पूजा ने सुनील की तरफ देखा-"उफ्फ…. कितने बदमाश हो ! प्रेत की तरह कहीं भी अचानक प्रकट हो जाते हो!”
बात काट कर सुनील बोला-"तुम कितनी समझदार हो गई हो देवी !"
"कैसे?”

"पहले से ही तुम समझ गई थी कि मैं तुझे शाम को सिनेमा दिखाने ले जाउंगा ! सो मेरे आने से पहले ही लिपिस्टिक पावडर मार के तैयार हो रही थी !"
पूजा इठलाते हुए बोली-"सिनेमा देखने तो मैं अपनी सहेली की ब्वायफ्रेंड के साथ जाउंगी ! पता है, वो विधुत जामवाल की तरह सुपर फाईटर है !"
जवाब में सुनील ने अपना सीना फुलाया-"मैं भी साठ हजार हाथियों का बल रखने वाला गदाधारी भीम हूँ !"
पूजा हँस पड़ी ! उसके गुलाब की पंखुड़ियों जैसे होंठों के बीच सफेद दाँत यूँ चमक उठे, जैसे धूप की रौशनी के बीच रेत में मोती चमकते हैं ! दरअसल उसकी सहेली का कोई ब्वायफ्रेंड नहीं था ! वो शादीशुदा थी ! पूजा सुनील को चिढ़ाने के लिए झूठ बोला करती थी !
एकाएक जैसे कुछ याद आया हो, पूजा बोली-"मेरे लिए चटनी और समोसा लाए कि नही !"
सुनील ने अपने हाथ में दबा हुआ छोटा सा थैला पूजा के सामने रखा-"लो करो पेट पुजा !"
खुश होकर थैला खोलते हुए पूजा बोली-"साथ में मिर्ची भी तो जरूर होगा?"
'मिर्ची भी है ..और सुन, जिस दुकान से मैं ये समोसा लाया हूँ ! उस दुकान की खासियत तुझे बताउँ?"
"बताओ !"- उत्सुकता से पूजा ने पूछा !
"उस दुकान में समोसा के साथ चटनी और मिर्ची फ्री में मिलती है !"
"क्या कहने!"-पूजा ब्यंग्य-पूर्वक बोली! सुनील हँसा !
एक समोसा थैले में से उठाते हुए पूजा बोली-"तुम तो खाओगे नही?"
"तुमसे बचे तो खा लूंगा ! वैसे पूछ क्यों रही है?"
"क्यूंकि"-पूजा कुटिल भाव से मुस्कुराई-"समोसा खाने से तुम्हारा हाजमा खराब हो जाता है !"
आँखे निकालता हुआ सुनील बोला-"सीधे-सीधे बोल न कि मैं अकेले हीं खाउंगी ! पेटू जो ठहरी !"
पूजा हँसने लगी !
सुनील भुनभुनाते हुए अपने केबिन में जाने के लिए आगे बढ़ गया !

[] [] []

अगले दिन सुबह सुनील मकतुला शीतल राजपूत के घर पहुँचा !
अकेले .. उसके घर के सामने अपनी गाड़ी रोक कर वो गाड़ी से नीचे उतरा ! दरवाजे पर पहुँच कर कॉल-बेल का स्वीच दबाया !
दरवाजा दो मिनट बाद खुला, और खुले दरवाजे पर एक कोई पैंतीस-चालीस साल की सुंदर औरत नजर आई ! वो हल्के स्काई कलर की साड़ी पहनी हुई थी ! ताजे खिले सुर्ख लाल गुलाब की रंगत लिए हुए उसके होंठ लिपिस्टिक से पुते हुए थे ! उसने जो लो-कट ब्लाउज

पहनी हुई थी, वो ब्लाउज की जगह ब्रा मालूम पड़ती थी ! जो सिर्फ़ उसके दोनों संतरों को किसी तरह से ढके हुए थी !
सुनील ने ये अनुमान लगाया कि ब्लाउज सिलते वक्त यकीनन दर्जी ने ब्लाउज पीस में से रूमाल बनाने के लिए कुछ कपड़ा चुरा लिया होगा !
कुछ कलयुगी महिलाओं की आदत भी अजीब होती है ! वो वेशभूषा सन्नी लियोन की तरह बना कर रखती है, और सम्मान माता सीता की तरह पाना चाहती है ! मर्दों को रिझाने के लिए अपनी पंद्रह हॉर्स पावर की जेनरेटर दिखा कर भाव खाती है ! मर्द जब रिझ कर कुछ कर दे, तो माला-डी खाती है !
दरवाजा खोलने के बाद उसने सवालिया भाव से सुनील को देखा !
सुनील ने बकबकी की-"लोग मुझे सुनील दी ग्रेट के नाम से जानते है देवी, और इस वक्त हम आपसे मिलने के लिए हीं प्रकट हुए हैं !"
वो औरत चुपचाप दरवाजे पर से हट गई! सुनील उसके पीछे अंदर प्रविष्ट हुआ ! बैठक में पहुँच कर औरत रुकी, और खुद सोफे पर बैठते हुए उसने सुनील को बैठने का इशारा किया !
सुनील उसी सोफे के दुसरे सिरे पर बैठ गया !
"बोलो"-वो मुरझाए स्वर में बोली–"कौन हो, और मुझसे क्यूँ मिलने आए हो?"
अपना परिचय देते हुए सुनील बोला-"मैं एक प्राइवेट डिटेक्टिव हूँ देवी, और पुलिस के साथ-साथ मैं भी शीतल के कत्ल के केस की तहकीकात कर रहा हूँ ! इसी संदर्भ में हम आपसे कुछ जानकारी लेने पधारे है!"
शीतल का नाम सुन कर उसकी आँखें डबडबा उठी !
"देखिए देवी जी"-उसको सांत्वना देते हुए सुनील बोला-"जो हुआ, अब उसे वापस तो नहीं किया जा सकता ! लेकिन कम से कम कातिल को सजा तो दिलवाई जा सकती है ! आप कातिल को सजा पाते हुए देखना चाहती है या नहीं?"
दाँत पीसते हुए वो औरत, जो मकतूला शीतल राजपूत की माँ सुधा राजपूत थी, बोली-"मैं चाहती हूँ कि कातिल फाँसी के तख्ते पर चढ़े, और उसके गले में फाँसी का फंदा जल्लाद की जगह मैं डालूँ !"
सुनील ने अपना हाथ भगवान विष्णु की तरह वरदान देने की मुद्रा में उठाया-"तथास्तु देवी, ऐसा हीं होगा ! लेकिन इसके लिए आपको भी मेरी थोड़ी सी मदद करनी पड़ेगी !"
"वो कैसे?"
"मेरे कुछ सवालों के जवाब देकर !"
"पूछो !"
"आप मकतूला की माँ है ! सो जाहिर है कि अपनी बेटी शीतल के बारे में आप सब कुछ जानती होगी ! फिर आप ये बताइए कि, क्या शीतल की किसी के साथ कुछ दुश्मनी थी? वो

भी ऐसी दुश्मनी कि कोई उसे जान से मारने पर मजबूर हो जाये!"
सुधा ने इन्कार में सिर हिलाया-"बिल्कुल नही, सबके साथ उसके मधुर सबंध थे !"
"देखिए देवी"-सुनील उसे समझाता हुआ बोला-"बगैर किसी दुश्मनी के यूँ ही कोई किसी की हत्या नहीं कर देता है ! जरूर कोई उससे इस कदर परेशान हो चुका था कि, उसके पास उसकी हत्या कर देने के अलावा और कोई विकल्प न था !"
"ऐसा कोई जरूरी नहीं है"-सुधा बोली–"बहुत से ऐसे उदाहरण देखने को मिलते हैं कि बिना किसी कसूर के ही सिर्फ़ अपने स्वार्थ-पूर्ति के लिए कोई किसी की हत्या कर देता है !"
सुनील को सुधा की बात से सहमत होना पड़ा ! वो ठीक हीं कह रही थी ! आए दिन अखबारों में ये खबरें छपती रहती थी कि फलाँ जगह पर अपराधियों ने एक लड़की की रेप करके हत्या कर दी ! एसे मामलों में लड़कियों का क्या दोष?
सुनील ने अगला सवाल किया-"शीतल की कोई सहेली या सहेला ..जिससे वो काफी करीब रही हो?"
सुधा ने जवाब दिया-"सुरेश पटनायक करके एक लड़का है, जिससे शीतल शादी करना चाहती थी !"
"मतलब देवी, उन दोनों के बीच ईशिक-विशिक का चक्कर था ! और आप उन दोनों की लाभा-ईस्टोरी में खलनायिका थीं?"
"बिल्कुल नहीं, लेकिन शीतल की माँ होने के नाते मैं शीतल को इतना जरूर बोली थी कि, पहले मैं लड़के का कुल-खानदान, उसकी शिक्षा, आय-व्यय के बारे में पता करूंगी ! फिर नतीजा अच्छा निकलने पर हीं शादी की अनुमति दूँगी ! जिसे की शीतल बे-हिचक मान गई थी !"
"फिर आपने लड़के के बारे में पता किया?"
"कहाँ... नौबत हीं नहीं आई ! उससे पहले ही शीतल.."!-कहते-कहते सुधा का स्वर भर्रा उठा ! और फिर एकाएक वो हिचकी लेकर रो पड़ी !
सुनील ने उसे चुप होने के लिए कहा ! उसे सांत्वना देने के लिए अनजाने में हीं वो थोड़ा आगे बढ़ा ! और यही उसकी सबसे बड़ी गलती थी !
लता जिस पेड़ के नजदीक होती है, उसी पेड़ से लिपट जाती है ! किसी से हमदर्दी और सहारा मिलने पर इंसान और कमजोर हो जाता है ! उस नाजुक क्षण में सुनील की हमदर्दी पाकर सुधा और जोर से रो पड़ी ! और फिर रोते-रोते वो एकाएक सुनील से लिपट गई !
अब बड़ी ही विचित्र स्थिति में फँस गया सुनील... मकतूला शीतल के माँ की बजाय बड़ी बहन लगने वाली भरपूर बदन की पैतीस साला सुंदर औरत अस्त-ब्यस्त हालत में उससे लिपटी हुई थी !
रोने के सुर में उसने सुनील को अपने अंक में यूँ भींच रखा था कि सुनील को अपनी हड्डियाँ कड़कती हुई सी लगी !

सुधा के दोनों बड़े-बड़े टाइट मुँहजोर स्तन सुनील के सीने में चुभ रहे थे ! उसके शरीर में चार सौ चालीस वोल्ट का करेंट दौड़ गया ! उसे अपना शरीर मोम सा पिघलता हुआ प्रतीत हुआ !
मगर फिर अगले हीं पल सुनील ने खुद को संभाल लिया ! सबसे पहले उसने रोती हुई सुधा को चुप कराया ! फिर उसने उसे खुद से अलग करने की कोशिश की !
मगर सुनील का माथा ठनका ! कारण ... सुधा सुनील को छोड़ने के मूड में नहीं थी ! उसने और जोर से कस के सुनील को अपने आगोश में भींच लिया !
सुनील का तन-बदन सुलग उठा ! वो कसमसाया !
सुधा जो अब चुप हो चुकी थी, उसके कान में फुसफुसाई-"चुपचाप खड़े रहो !"
“आपके पति कहाँ है?”-सुनील ने पूछा !
सुधा अपने होठों को सुनील के होंठों से रगड़ने लगी-"डरो मत...मेरे पति यहाँ नहीं आने वाले....वो तो चार साल पहले ही एक सड़क दुर्घटना में भगवान को प्यारे हो चुके हैं ! तब से लेकर आज तक किसी मर्द ने मुझे छुआ तक नहीं था !"
सुनील समझ गया कि अब पूरी तरह गर्म व कामातुर हो चुकी सुधा बिना अपने खेत में हल जुतवाए मानने वाली नहीं थी ! उस वक्त सुनील के जेहन मे ये सवाल भी बिजली की तरह कौंधा कि ये कैसी मां है, जो अपनी बेटी की मौत पर दुखी होने की बजाय किसी पराए मर्द के साथ सोना चाहती है?
उसने सीरीयसली सुधा को अलग करके उसे किसी नाजुक गुड़िया की तरह धीरे से सोफे पर फेंका-"अरे देवी, मैं बजरंग बली का भक्त हूँ ! आप मेरा ब्रह्मचर्य भंग करने पर क्यूँ तुली हुई हो?”
सुधा कुछ न बोली ! उसकी हालत ठीक उस बिल्ली की तरह हो गई, जिसके आगे से मलाई की कटोरी हटा ली गई हो !
सुनील ने उसे कायदे से झिड़का-"आपको लज्जा आनी चाहिए ! अभी दो मिनट पहले आप अपनी बेटी की मौत के गम में पागल थी ! और अभी आप एक पराऐ मर्द के साथ सोने के लिए बेचैन हो रही हैं !"
सुनील की बातो से वो शर्मिंदा हुई-"मुझे अभी भी अपनी बेटी की मौत का गम है ! लेकिन क्या करूँ, इंसान की भावनायें हर पाँच मिनट पर बदलती रहती है ! सो मेरा भी बदल गया.. सॉरी..!"
सुनील ये अनुमान न लगा सका कि वो वाकई सच कह रही थी? या वो दुखी होने की एक्टिंग कर रही थी?
अपनी साड़ी ठीक करती हुई, साड़ी के पल्लू से अपनी छातियों को ढकती हुई वो सामने सोफे पर बैठ गई ! सुनील भी बैठ गया !

फिर उसने सुरेश की बावत पूछा-"वो लड़का सुरेश पटनायक, जिससे आपकी बेटी का अफेयर था ! कभी आप उससे मिली है?"
सुधा ने संभल कर जवाब दिया-"दो-तीन बार मिली हूँ ! तब जबकि वो शीतल से मिलने कभी-कभार यहाँ आ जाया करता था !"
ब्यंग्य-पूर्वक सुनील ने पूछा-"उसके साथ भी आप ऐसा हीं करती थी?"
"कैसा.. कैसा करती थी?"
"जैसा कि अभी आपने मेरे साथ किया!"
"पागल हुए हो"-सुधा अचकचाई-"सत्यनारायण भगवान का प्रसाद है क्या, जो मैं सबको बाँटती फिर रही हूँ !"
"उस बालक सुरेश पटनायक का कोई अता-पता हो तो मुझे दे दीजिए देवी!"- सुनील बोला !
जवाब में सुधा ने एक पता बताया, जिसे कि सुनील ने नोट कर लिया ! उसके बाद सुनील ने उस समय वहाँ रुकना उचित न समझा ! और वह जाने के लिए उठ कर खड़ा हुआ !
उसे जाने को तत्पर देखकर व्यग्र-भाव से सुधा बोली-"अपना कांटेक्ट नंबर तो देते जाओ ! कुछ नई बात मालूम होने पर बता दूंगी !"
सुनील उसे अपना और पुजा का मोबाइल नम्बर देकर वहाँ से तुरंत यूँ निकला, जैसे उसके पीछे सैकड़ों भूत लगे हों !

[] [] []

सुधा के दिए हुए पते पर सुनील मकतूला शीतल के मंगेतर सुरेश के घर पहुँचा !
सुरेश पटनायक तकरीबन तीस-पैंतीस साला एक उम्र-दराज नौजवान निकला ! सामने से उसके सिर के लगभग आधे बाल उड़ चुके थे ! चेहरे से भी वो कोई खास स्मार्ट नहीं दिखता था ! उसे देख कर सुनील को ये हैरानी हुई कि आखिर मकतूला शीतल उसके किस चीज से प्रभावित होकर उससे शादी करना चाहती थी !
मन ही मन उसने सोंचा ! क्या हो गया है आजकल की लड़कियों को?
सुरेश ने सुनील को गौर से देखा-"जी हाँ कहिए, किससे मिलना है?"-उसने सुनील से पूछा !
“अजी”-सुनील दार्शनिक भाव से बोला–" मिलना तो सबको एक दिन परमात्मा से है सुरिया भाई.. लेकिन सोंचा पहले तुमसे ही मिल लूँ!"
"सुरिया"-सुरेश अचकचाया-"कौन सुरिया? मेरा नाम सुरेश है!"
"एक हीं बात है प्यारे, सुरेश का मतलब सुर्य हीं होता है ! हमने सीधे-सीधे सुरिया कह दिया!"
"ओह आइए!"
वो सुनील को अंदर लेकर गया ! बैठने के लिए कुर्सी पेश की, फिर बोला-“कुछ चाय-कॉफी?"

“ठैन्कु प्यारे, उसकी कोई जरूरत नहीं... हम हैरीटेज हॉस्टल हत्याकांड की तफ्शीश के सिलसिले में तुमसे कुछ जानकारी हासिल करने आए हैं ! तुम सिर्फ हमारे सवालों के जवाब दे दो, उतना हीं काफी है !"
“ओके”-सुरेश बैठते हुए बोला-“पूछिए, क्या पुछना चाहते हैं?”
"शीतल को कब से जानते थे?"
"हम दोनों करीब दो साल से एक दूसरे को जानते थे ! बहुत जल्द हम लोग शादी भी करने वाले थे लेकिन!”-उसने अफसोस-पूर्वक गरदन हिलाया !
“यहाँ अकेले रहते हो?”
"जी हाँ.. क्यूँ?”
"मेरा मतलब तुम्हारे माता-पिता वगैरह?"
"कोई नहीं है! मेरे माता-पिता बहुत पहले हीं स्वर्ग-वासी हो चुके हैं !”
“हाँ.. तो अब !”
“एक मिनट रुकिए"-सुनील की बात काटते हुए सुरेश बोला-“मुझे अब जाकर ये पूछना सूझ रहा है कि आप कौन है? पुलिस?”
“सुरिया भाई-“सुनील ने बताया-"लोग हमें सुनील दी ग्रेट के नाम से जानते हैं ! स्टेशन रोड में ‘ग्लोबल इन्वेस्टीगेशंस‘ के नाम से हमारी एक प्राइवेट डिटेक्टिव एजेंसी है ! और इस वक्त हैरीटेज हॉस्टल हत्या-कांड केस की तफ्शीश के सिलसिले में हम यहाँ प्रकट हुए हैं !”
“कौन है आपका क्लायंट?” -सुरेश ने पूछा!
"हमारी प्यारी गिरलफरेंड फुलमतिया की जालीदार कुरती की छेद के साथ हमें खेद है युरिया.... सॉरी सुरिया भाई कि धंधे के उसूल के मुताबिक ये मैं तुमको नहीं बता सकता !"
“ओह कोई बात नही”-सुरेश बोला-"लेकिन मैं भी आपका क्लायंट बनना चाहता हूँ!"
“तुम?"- सुनील चौंका !
"मैं अभी आया!"-कह कर सुरेश अंदर गया! दो मिनट बाद जब वह वापस आया, उसके हाथों में पाँच सौ के नोट की एक नई-नकोर गड्डी दबी हुई थी !
गड्डी उसने सुनील की तरफ बढ़ाई ! नोटों को हाथ लगाए बिना सुनील ने सवाल किया-"सुरिया भाई... ये किसलिए?"
"ये मेरी तरफ से एडवांस है ! काम हो जाने पर आप बाकी का जितना पैसा मांगेंगे, दे दूंगा !"
"लेकिन सुरिया भाई !"
“मरने वाली मेरी मंगेतर थी ! मेरी होने वाली बीवी थी ! सो आप मेरी खातिर कातिल का पता लगाइए !"
सुनील ने पैसे लेने का उपक्रम न किया ! सुरेश ने वो गड्डी सुनील की जेब में ठूँस दी !

सुनील ने अगला सवाल पूछा-"करते क्या हो सुरिया भाई... मतलब नौकरी या कुछ बिजनेस-धंधा?"
सुरेश खेदपूर्वक हँसा-"अभी तो बेरोजगार पांडे हूँ ! कोई ढंग की नौकरी तलाश कर रहा हूँ !"
थोड़े विनोदपूर्ण स्वर में सुनील बोला-"नौकरी की तलाश कर रहे थे ! लेकिन किस्मत वालों को जैसे बबूल के नीचे आम मिल जाता है, वैसे हीं नौकरी से पहले शीतल के रूप मे एक छोकरी मिल गई थी ! अजीब बात है प्यारे, लड़की और कड़की दोनों एक साथ आती है !"
सुरेश हँसा, फिर तत्काल वो संजीदा होता हुआ बोला-'क्या फायदा, वो रही तो नहीं!"
कुछ क्षण वो उदास रहा ! फिर उसने सुनील से पूछा-"केस के बारे में कातिल तक पहुँचने लायक कोई क्लू या सूत्र मिला?"
"अभी तक तो कुछ भी नहीं ... अभी तो यही कोई नही मान रहा कि ये कारनामा किसी इंसान का है ! वैसे एक बात पूछना मैं भूल गया !"
"पूछिए !"
"जैसा कि अभी-अभी तुमने कहा कि मैं बेरोजगार हूँ तो इस कंडीशन में तुम्हारी दाल-रोटी कैसे चलती है?"
सुरेश ने जवाब दिया-"मेरे माता-पिता कुछ पैसे छोड़ कर गए थे ! वही खर्च कर रहा हूँ !"
सुनील को वो साफ झूठ बोलते हुए लगा ! मगर कुछ सोंच कर वो चुप रह गया !

[] [] []

सुरेश के घर से निकल कर सुनील थाने में पहुँचा ! तब इंस्पेक्टर शिवशंकर उसे अपने ऑफिस में हीं बैठा हुआ मिला !
"आईए मि. सुनील!"-उसे देख कर इंस्पेक्टर बोला !
सुनील सामने पड़ी एक खाली कुर्सी पर ढेर हुआ !
"कुछ चाय काफी पिएंगे?"
"मिलेगी तो पी लूंगा !"
इंस्पेक्टर ने हवलदार को बुला कर दो कप कॉफी का आर्डर दिया ! तुरंत हवलदार कॉफी से भरे दो कप टेबल पर रख कर चला गया ! इंस्पेक्टर ने एक कप उठा कर सुनील की तरफ बढ़ाया ! दूसरा कप उठा कर अपने होंठो से लगाते हुए वो बोला-"कैसे आना हुआ?"
कॉफी का कप होंठों से लगा कर कॉफी चुसकते हुए सुनील ने पूछा-"कत्ल के बारे में कुछ नयी बात पता चली?"
निराश स्वर में इंस्पेक्टर शिवशंकर बोला-"अभी तक तो कुछ भी मालूम न हो सका ! बस इस केस में सिर धुन रहे हैं !"
"हत्या में इस्तेमाल की गई छुरी को तुमने जाँच के लिए लेबोरेटरी भेंजा था?"

कॉफी चुसकता हुआ इंस्पेक्टर बोला-"उसकी रिपोर्ट आ गई है ! सुनेंगे तो दिमाग और घूम जाएगा !"
“घुमा दो प्यारे”-सुनील बोला-“ऐसी कौन सी बात है रिपोर्ट में?”
“लेबोरेटरी की रिपोर्ट के मुताबिक छुरी पर लगा हुआ खून मकतूला शीतल का ही था! लेकिन रिपोर्ट के मुताबिक जो दिमाग घुमा देने वाली बात है, वो ये है कि छुरी पर लगा हुआ खून किसी इंसान ने नहीं, बल्कि किसी जानवर ने चाटा था !”
“जानवर?”-सुनील चौंका-“अंदर से बंद कमरे में जानवर कैसे और क्यों कर पहुँचा?”
“भगवान जाने, और सुनिए ! पोस्टमार्टम की रिपोर्ट भी आ गई थी ! जिसके मुताबिक मकतूला शीतल की मौत किसी तेज धारदार हथियार से साँस-नली काट दिए जाने के कारण हुई ! कत्ल के टाइम को पिन-प्वायंट करते हुए रिपोर्ट बताती है कि मौत घटना वाले दिन रात को एक से दो बजे के बीच में हुई थी !"
अपनी कॉफी खत्म करके खाली कप टेबल पर रखते हुए सुनील बोला-“एक सवाल है, जिसका जवाब मेरी समझ में नहीं आ रहा प्यारे !”
“कौन सा सवाल?”
“अगर ये हत्या वाकई किसी इंसान का कारनामा है तो फिर घटना-स्थल पर कमरे का दरवाजा अंदर से कैसे बंद था? जब अंदर से दरवाजा बंद था तो कातिल कमरे में अंदर कैसे गया? और फिर कत्ल करने के बाद बिना दरवाजा खोले वो कमरे से बाहर कैसे निकल गया?”
शिवशंकर ने भी अपनी कॉफी खत्म करके खाली कप टेबल पर रखा-"तफ्शीश में एक और चौंकाने वाली बात सामने आई है !”
“क्या?”- सुनील ने पूछा !
"मकतूला शीतल के रूम के बाहर गैलरी में जो सी.सी. कैमरा लगा था ! मैने कत्ल वाले दिन की उसकी फुटेज चैक की है ! सी.सी. टीवी फुटेज में कत्ल वाली रात को मकतूला शीतल के दरवाजे पर कोई भी न दिखाई दिया !”
सुनील चौंक उठा-“ऐसा कैसे हो सकता है? कातिल जब कत्ल करने आया, कत्ल करके जब जाने लगा, तो दोनों समय की वीडियो भला कैमरे में क्यों न बनी?”
इंस्पेक्टर कुछ जवाब देता, उससे पहले हीं उसके सामने टेबल पर रखे टेलीफोन की घंटी बजी ! शिवशंकर ने हाथ आगे बढ़ा कर फोन का रिसीवर उठाया !
“हैलो !”-वो माउथपीस में बोला !
उधर से कुछ पूछा गया ! जिसके जवाब में शिवशंकर बोला-“यस... मैं थाने से ही बोल रहा हूँ, कहिए !”
दुबारा उधर से कुछ कहा गया ! जिसे सुन कर इंस्पेक्टर शिवशंकर की आँखें जुगनुओं की मानिंद चमक उठी ! अगले पाँच मिनट तक वो फोन पर हीं बात करता रहा !

सुनील दिलचस्पी के साथ उसे देख रहा था ! अंत में उधर से एक एड्रेस बताया गया ! जिसे नोट करके शिवशंकर ने फोन रख दिया !
“किसका फोन था प्यारे?”-उत्सुक भाव से सुनील ने पूछा !
"किशनलाल चतुर्वेदी करके एक कोई प्रोफेसर है !”
“क्या कह रहा था?”
“हैरीटेज हॉस्टल हत्याकांड के बारे में वो पुलिस को कोई निहायत हीं जरूरी बात बताना चाहता है !”
सुनील तुरंत अपनी कुर्सी पर सीधा हुआ-“फिर तो अभी वहाँ उसके पते पर चलना होगा !”
“हाँ”-खड़ा होते हुए इंस्पेक्टर बोला-“चलिए देखते हैं, क्या कहना चाहता है !”
सुनील तुरंत अपनी कुर्सी से उठ खड़ा हुआ !

[] [] []

प्रोफेसर किशनलाल चतुर्वेदी के बताए पते पर सुनील शिवशंकर के साथ उसके घर पहुँचा ! सुनील अपनी गाड़ी थाने में हीं छोड़ कर शिवशंकर की वैन में वहाँ पहुँचा था !
उसके मकान के सामने कुछ दूरी पर हीं इंस्पेक्टर ने अपनी वैन रुकवाई ! सुनील और शिवशंकर दोनों वैन से नीचे उतरे! फिर पैदल चलते हुए दोनों उसके मकान के मुख्य दरवाजे तक पहुँचे !
सुनील ने हाथ आगे बढ़ा कर मेन गेट पर लगे कॉलबेल की स्वीच दबाई ! अंदर कहीं घंटी की मधुर संगीत-मय स्वर गूँजी ! दस-पन्द्रह सेकेंड बाद.. तीस-बतीस साल की एक हाई-वोल्टेज करेंट वाली आईटम ने दरवाजा खोला !
आगंतुक पुलिस और दूर खड़ी पुलिस वैन को देखते हुए प्रश्नसूचक भाव से वो बोली-“जी कहिए?”
शिवशंकर कुछ बोलता, उससे पहले हीं सुनील बोला-“प्रोफेसर साहब से जाकर कहिए देवी कि कैलावा पर्वत से साक्षात भगवान शिवशंकर सुनील दी ग्रेट के साथ पधारे हैं !”
“जी”-वो हकलाई-“क्या बोलूँ?”
"जाकर के उनसे कहिए कि सुनील दी ग्रेट, राइट टाइम नो लेट... प्रोफेसर साहब से करने भेंट, उनके फ्लैट आए हैं !”
वह औरत सुनील को यूँ देखने लगी जैसे सुनील के सिर पर सिंग निकल आए हों ! फिर वो तत्काल अंदर भागी ! पीछे इंस्पेक्टर शिवशंकर सुनील की तुकबंदी पर हँसता हुआ बोला-“बातें तो बहुत बढ़िया करते हैं आप !”
जवाब में सुनील ने अपना सीना गर्व से फुला लिया-“और भी बहुत से काम हैं जो कि मैं बढ़िया करता हूँ !”
शिवशंकर कुछ जवाब देता, इससे पहले ही वो आईटम पुनः दरवाजे पर प्रकट हुई, बोली-“अंदर आइए !”

कह कर वो वापस अंदर घुमी ! सुनील और इंस्पेक्टर शिवशंकर दोनों उसके पीछे हो लिए ! दोनों को साथ लिए हुए वो बैठक में पहुँची ! बैठक के ठीक सामने एक और कमरा था, जहाँ पहुँच कर वो रुक गई ! और उसने दोनों को कमरे के अंदर जाने का इशारा किया ! धीरे से दरवाजे को ठेल कर दोनों अंदर कमरे में प्रविष्ट हुए !
वो एक स्टडी रूम कम प्राईवेट लाइब्रेरी थी ! कमरे के ठीक बीचो-बीच एक मेज और उसके इर्द-गिर्द चार कुर्सियाँ रखी हुई थी ! पीछे दीवार में लकड़ी की एक विशाल शेल्फ लगी हुई थी ! और उस सेल्फ में बेहद करीने से सजा कर रखी हुई थी- कुछ चुनिंदा लेखकों की एक से बढ़ कर एक पुस्तकें !
प्रोफेसर किशनलाल चतुर्वेदी मेज के पीछे एक कुर्सी पर बैठा इंस्पेक्टर शिवशंकर का ही इंतजार कर रहा था ! वो एक कोई पचपन साठ साल का अधेड़ व्यक्ति था ! अपने शरीर पर वो दुध सी झक सफेद धोती और हल्के क्रीम कलर की कमीज पहने हुए था !
शिवशंकर और सुनील जब अंदर कमरे में प्रविष्ट हो चुके, शिष्टाचार-वश प्रोफेसर तब अपनी कुर्सी से उठ कर खड़ा हुआ !
और उसने दोनों को सामने कुर्सी पर बैठने का इशारा किया ! तब जबकि दोनों बैठ चुके, अभिवादनों का आदान-प्रदान हो चुका, वो खुद भी अपनी कुर्सी पर बैठते हुए बोला-“आपमें से एक इंस्पेक्टर शिवशंकर हैं, जिनको मैंने थाने में फोन किया था !”
“जी हाँ, मैं ही इंस्पेक्टर शिवशंकर होता हूँ!“-शिवशंकर ने जवाब दिया !
प्रोफेसर ने सुनील की ओर सवालिया भाव से देखा–“इन जेंटलमैन का परिचय !”
सुनील झट से बोल पड़ा-“अजी हमारा परिचय बहुत मामूली है ! न बेल....न बेल का शरबत़, बंदे को सुनील कुमार कहते हैं ! पेशे से एक प्राइवेट डिटेक्टिव हूँ, और ग्लोबल इन्वेस्टीगेशंस' नाम की एक प्राइवेट डिटेक्टिव एजेंसी चलाता हूँ !”
सुनील की बात सुन कर प्रोफेसर मुस्कुराए बिना न रह सका-"काफी नाम सुना था आपका .. आज आपसे रूबरू मिलने का अवसर मिला ! मि. सुनील, काफी पहुँची हुई चीज हैं आप !”
"अजी ठेंगा”-सुनील ने बुरा सा मुँह बनाया–"काहे का पहुँचा हुआ? आज तक तो मैं अपने ससुराल भी न पहुँच सका !"
प्रोफेसर हँसा-"बातें बनाना कोई आप से सीखे! वैसे मिस्टर सुनील, एक बात बताईए !"
“दो पूछिए जनाब !”-तत्पर स्वर में सुनील बोला !
“कुछ ठंढा मंगाऊँ या गरम?”-प्रोफेसर ने पूछा !
“अजी दोनों मंगा लीजिए!”-सुनील बोला !
“दोनों?”-प्रोफेसर सकपकाया !
“बिल्कुल हजूर दोनों”-सुनील बोला-“चाय गरम... पानी ठंढा !"

“ओह मि. सुनील”-प्रोफेसर अब समझा-“बहुत खूब .. आपके बात करने का तरीका लाजवाब है !"
प्रोफेसर ने नौकरानी को फोन करके तीन चाय लाने का ऑर्डर दिया ! शेल्फ में सजी पुस्तकों को देखते हुए शिवशंकर बोला-“पुस्तकों के काफी शौकीन आदमी मालूम होते हैं आप !”
"प्रोफेसर हँसा-“शौकीन नही, किताब का कीड़ा या दिवाना कहिए ! खाली समय में मैं सिर्फ और सिर्फ पढ़ना पसंद करता हूँ!”
“बहुत अच्छी आदत है”-शिवशंकर बोला- "मनोरंजन के साथ-साथ ज्ञान-वर्द्धन भी होता रहता है !"
शिवशंकर आगे और कुछ बोलता, तभी कमरे का दरवाजा खुला ! और कमरे में वही आईटम प्रविष्ट हुई, जो उन्हें इस कमरे के बाहर तक छोड़ कर गई थी ! उसके हाथों में एक बड़ी सी ट्रे थी ! जिसमें पानी से भरे हुए काँच के तीन गिलास और चाय से भरे तीन कप रखे हुए थे ! ट्रे को टेबल पर रखते हुए वो ध्यान से सुनील को देख रही थी ! सुनील अब समझा कि ये नौकरानी थी ! लेकिन चेहरे और कपड़े से वो कहीं से भी नौकरानी नही दिख रही थी ! वो अब भी बदस्तूर सुनील को घूर रही थी !
सबकी नजर बचा कर सुनील ने आहिस्ते से उसे आँख मार दी !
वो हड़बड़ाई ! मुस्कुराई, फिर वहाँ से निकल गई ! पीछे प्रोफेसर ने शिवशंकर और सुनील को पानी का गिलास और चाय का कप पकड़ाया !
पानी पीकर शिवशंकर ने खाली गिलास ट्रे में रखा ! फिर चाय का कप होंठों से लगाते हुए वो असल बात पर आया-"हैरीटेज हॉस्टल हत्याकांड के बारे में पुलिस को आप कुछ जरूरी बात बताना चाहते थे !"
जवाब में प्रोफेसर ने पहले आराम से अपनी चाय खत्म की ! इधर इंस्पेक्टर शिवशंकर जवाब पाने के लिए आतुर हो रहा था ! जबकि सुनील आराम से चाय चुसकता हुआ बड़े धैर्य से उसके बोलने की प्रतीक्षा कर रहा था ! चाय खत्म करने के बाद खाली कप ट्रे में रख कर प्रोफेसर ने मेज का दराज खोला ! दराज में से सिगरेट का एक फुल पैकेट निकाला ! और वो पैकिट शिवशंकर और सुनील की तरफ बढ़ाया !
दोनों के मना करने पर उसने पैकिट में सें एक सिगरेट खुद के लिए निकाल ली ! उसे होंठों में फँसा कर लाइटर से सुलगाया ! लाइटर बुझाई, और सिगरेट का एक भरपूर कश लगा कर होंठों को गोल बनाते हुए धुआँ बाहर फेंका !
फिर बोलना शुरू किया-“मैं एक ऐसी बात आप लोगों को बताना चाहता हूँ, जिसे सुन कर हो सकता है कि आप लोगों को इस वर्तमान केस को हल करने के लिए कुछ क्लू मिल जाए ! और सच पूछिए तो हमें आश्चर्य हो रहा है कि आज जो कुछ भी यहाँ हैरीटेज हॉस्टल में हुआ है, ठीक ऐसा ही वाकया आज के दस साल पहले वहाँ भी हुआ था !"
ब्यग्र भाव से शिवशंकर ने पूछा-“कहाँ.. कहाँ हुआ था?”

जवाब में प्रोफेसर ने फिर से सिगरेट का एक कश लगाया ! नाक से धुआँ फेंकी, फिर बताना शुरू किया-“आज से दस साल पहले की बात है ! तब गर्मी के दिनों में मेरा कहीं घूमने जाने का मूड बना हुआ था ! काफी सोंच-विचार के बाद तब मेरा मारीशश जाना तय हुआ था !
वीजा फ्री होने के साथ वहाँ घूमने लायक एक से बढ़ कर एक जगह है ! खास करके मारीशश की राजधानी पोर्ट लुई ! दिल्ली से मारीशश की डायरेक्ट फ्लाइट, जो कि उपलब्ध थी, में मैंने एक टिकट बुक करा लिया था ! लेकिन तब मुझे क्या मालूम था कि पोर्ट-लुई पहुँच कर मुझे वो वाकया देखने को मिलेगा !”
दो सेकेंड के लिए सिगरेट का कश लगाने के लिए प्रोफेसर रूका ! शिवशंकर और सुनील चुपचाप सुन रहे थे! प्रोफेसर ने आगे बताना शुरू किया-"पोर्ट लुई पहुँच कर जब मैंने वहाँ की निराली प्राकृतिक सुंदरता देखी, तब मुझे एसा लगा कि धरती पर स्वर्ग सिर्फ कश्मीर में ही नहीं बल्कि यहाँ भी है ! उस समय मुझे पोर्ट-लुई इतना ज्यादा पसंद आया कि मैंने तब एक काम किया ! वही पोर्ट लुई में हीं समुद्र के किनारे बने एक होटल में किराये पर कमरा ले लिया !
सोंच लिया था कि यहीं शांति से दस पन्द्रह दिन प्राकृतिक वातावरण का आनंद लूंगा, फिर वापस इंडिया लौटूंगा ! इसी बीच मेरी वहाँ के उस होटल मालिक सिकंदर आलम से जान-पहचान फिर दोस्ती हो गई ! इतनी कि मैं उसके घर पर भी आने-जाने लगा ! उसके घर में कुल मिला कर सिर्फ चार प्राणी रहते थे !
घर का मुखिया सिकंदर आलम, उसकी बेगम मुमताज आलम, उसका ईकलौता बेटा शमीम आलम... और उसकी बहु फरीदा आलम ! कहते है कि छोटा परिवार सुखी परिवार ! सो छोटा परिवार होने के कारण उन लोगों का समय बड़े मजे से बीत रहा था ! लेकिन अचानक जैसे उस परिवार की खुशीयों पर किसी की नजर लग गई ! घर में भूत-प्रेत के मामले को लेकर रोज कलह होने लगी ! और फिर एक दिन वह परिवार बर्बाद हो गया ! उसी घर में एक कत्ल हो गया !”
हकबका कर शिवशंकर ने पूछा-“क ... किसका कत्ल हो गया?”
एसा लगता था जैसे प्रोफेसर को सस्पेंस क्रियेट करने की पूरानी आदत थी ! और एसा करने में उसे मजा आता था ! तभी तो जवाब देने की जगह उसने बड़े आराम से पहले सिगरेट का एक जोरदार कश खींचा, नाक से धुँयें की दोनाली छोड़ी !
सुनील आराम से उसके बोलने की प्रतीक्षा कर रहा था, जबकी शिवशंकर ने ब्यग्र भाव से पूछा-"किसका कत्ल हो गया प्रोफेसर, प्लीज बताइए !”
शिवशंकर की अवस्था का भरपुर मजा लेता हुआ प्रोफेसर मुस्कुराया,बोला-"सिकंदर आलम के बेटे शमीम आलम की पत्नी फरीदा आलम का कत्ल हो गया ! और कत्ल का तरीका साफ-साफ गवाही दे रहा था कि वो कत्ल कोई पिशाच-लीला ही थी ! कत्ल जिस तरीके से

हुई थी, उस तरीके से कत्ल करना किसी आदम-जात के बस की बात नहीं थी ! उस कत्ल के बारे में सभी ने एकमत होकर माना कि वो कत्ल यकीनन एक पिशाच-लीला थी!"
"कैसे हुजूर"-सुनील ने पूछा-"कत्ल किस तरीके से हुआ था?"
"कत्ल की रात सोने से पहले शमीम और फरीदा दोनों मियाँ-बीवी में किसी बात को लेकर झगड़ा हुआ था ! गुस्से में नाराज होकर शमीम बैठक में जाकर सो गया था ! पीछे उसकी बीवी फरीदा अपने उसी बेडरूम में अंदर से दरवाजा बंद करके सो गई थी ! फरीदा को सुबह चार बजे हीं जग जाने की आदत थी! लेकिन अगली सुबह आठ बजे तक भी जब उसके कमरे का दरवाजा नहीं खुला, तब घर के बाकी मेंबर को शक हुआ ! उन लोगों ने बाहर से पहले आवाज लगा कर फरीदा को पुकारा ! कोई जवाब न मिलने पर दरवाजे को जोर-जोर से पीटा गया ! इसके बाद भी जब अंदर से फरीदा नहीं बोली, तब उन लोगों ने बाहर से दरवाजे को तोड़ दिया !
और दरवाजा टूटने के बाद उन लोगों को अंदर का जो नजारा दिखाई दिया, उस नजारे को देख कर घर के मुखिया सिकंदर आलम की बीवी मुमताज आलम का हार्ट-फेल हो गया ! हृदय-गति रुक जाने के कारण बेचारी वहीं मर गई ! पीछे सिकंदर आलम भी गिर कर बेहोश हो गया था! वो शमीम ही था, जिसने चीखते हुए शोर मचा कर मदद के लिए पड़ोसियों को बुलाया था ! मदद के लिए पड़ोसी जब उसके घर में आए तो, अंदर कमरे का दृश्य देख कर उनकी अंतरात्मा तक काँप उठी !"
अपनी बात की प्रतिक्रिया देखने हेतू एक सेकेंड के लिए रूक कर प्रोफेसर ने सुनील और शिवशंकर के चेहरे को देखा !
शिवशंकर साँस रोक कर प्रोफेसर की बात सुन रहा था ! जबकि सुनील अपनी कुर्सी पर अधलेटा सा बैठा आँखे मूंद कर सुनने के साथ-साथ सोंच भी रहा था !
प्रोफेसर आगे बढ़ा-"मदद के लिए आए हुए किसी भी पड़ोसी की दोबारा वो दृश्य देखने की मजाल न हुई ! दृश्य हीं कुछ ऐसा था कि, मजबूत से मजबूत जिगरवाले का भी कलेजा कांप उठे ! अंदर कमरे में बेड पर फरीदा की लाश पड़ी थी !
सिर कटी लाश !
लाश का कटा हुआ सर बेड साईड टेबल पर सजा कर रखा हुआ था ! कटे हुए सिर से सारा खून बह जाने के कारण चेहरा एकदम से काला पड़ चुका था !
लाश के हाथ-पैर काट कर कमरे में ही अलग-अलग जगहों पर सजा कर रख दिए गए थे ! सिर्फ बीच का धड़ ही बेड पर पड़ा था !
कमरे में जगह-जगह खून का तालाब बना हुआ था ! और साफ-साफ दिखाई दे रहा था कि फर्श पर बिखरा हुआ खून जीभ से चाटा गया था ! जैसे कोई रक्त-पिपासु शैतान ही चाट सकता था ! कमरे के एक तरफ कोने में खड़ी करके रखी हुई थी !
एक तलवार ... खून से सनी हुई !

वो भारी सी तलवार देखने भर से ही किसी पूराने बाबा-आदम के जमाने की तलवार लग रही थी ! तलवार पर भी लगा हुआ खून जीभ से चाटा गया था ! फिर किसी ने पुलिस को फोन किया ! पुलिस आई, आवश्यक रूटीन-वर्क से निपटने के बाद लाश को पोस्टमार्टम के लिए भेंजा गया ! और फिर उस विभत्स हत्याकांड की जाँच शुरू हुई ! शायद आप लोगों को यह जान कर आश्चर्य होगा कि, उस घटना को आज दस साल बीत चुके हैं ! लेकिन आज तक वहाँ की पुलिस कातिल को नहीं पकड़ पाई है! आज भी उस केस का रहस्य ज्यों का त्यों अन-सुलझा हुआ है! वहाँ के लोगों का साफ-साफ मानना है कि वो कत्ल किसी इंसान के द्वारा किया गया कत्ल नहीं, बल्कि एक पिशाच-लीला थी! पुलिस-जाँच में इस बात को बल देने वाले कुछ महत्वपूर्ण सुराग भी पुलिस के हाथ लगे!"

सुनील ने अपने उसी पोज में बैठे आँखे बंद किए ही प्रोफेसर को टोका-"कौन से सुराग पुलिस के हाथ लगे हुजूर?"

प्रोफेसर ने बताया-"वो कत्ल वाकई एक पिशाच-लीला थी ! इस बात को बल देने वाली जो सबसे महत्व-पूर्ण बात थी ! वो ये थी कि जिस वक्त लाश बरामद की गई थी, उस वक्त तक कमरे का दरवाजा पूरी मजबूती के साथ अंदर से बंद था ! खिड़की के रास्ते भी कोई अंदर नहीं गया हो सकता था ! क्योंकि वो भी उस समय अंदर से बंद थी !"

आश्चर्यचकित भाव से इंस्पेक्टर शिवशंकर बुदबुदाया–"एसा कैसे हो सकता है? बिना खिड़की-दरवाजा खोले कोई इंसान अंदर-बाहर कैसे हो सकता है? एक भूत-प्रेत ही तो होते हैं, जो ताले के छेद या दरवाजे की झिर्री से अंदर-बाहर हो सकते हैं !"

शिवशंकर की अवस्था को देख कर प्रोफेसर मुस्कुराया–"इससे भी ज्यादा चौंकाने वाली एक और बात सुनो, जिसने मामले की जाँच कर रहे पुलिस दल को ये पक्का विश्वास दिला दिया कि, वो कत्ल वाकई एक पिशाच-लीला थी !"

सुनील व शिवशंकर ने अपने-अपने कान खड़े कर लिए ! प्रोफेसर बोला-"वो खास बात ये थी कि मौका-ए-वारदात पर पहुँची हुई पुलिस के फिंगर-प्रिंट एक्सपर्ट को कमरे में से सिर्फ़ मकतूला और उसके पति शमीम के फिंगर-प्रिंट और फुट-मार्क्स को छोड़ कर बाकी किसी भी तीसरे आदमी के फिंगर-प्रिंट या फुट-मार्क्स नहीं मिले थे !"

हैरत भरे स्वर में शिवशंकर बोला–"एसा कैसे हो सकता है कि कमरे में कोई घुसे और उसके हाथ-पैरों और उंगलियों के निशान कमरे में कहीं न बनें?"

सुनील ने सवाल किया-"हुजूर जैसा कि आपने बताया, मर्डर-वैपन एक बहुत पुरानी भारी सी तलवार थी ! उसके बारे में मकतूला के घर वालों ने पुलिस को क्या जवाब दिया था?"

"मकतूला फरीदा के घरवालों के बयान के मुताबिक वो तलवार उन लोगों की हरगिज नहीं थी ! और उस घटना से पहले उन लोगों ने उस तलवार को देखा तक नहीं था ! अभी और सुनो, पुलिस ने तब वो तलवार जाँच के लिए लेबोरेटरी भिजवा दी थी ! लेबोरेटरी से आई

रिपोर्ट के मुताबिक उस तलवार पर लगा हुआ खून किसी इंसान के द्वारा नहीं, बल्कि किसी जानवर के द्वारा चाटा गया था !"
सुन कर इंस्पेक्टर शिवशंकर ने अर्थ-पूर्ण भाव से सुनील की तरफ देखा ! सुनील ने यूँ सिर हिलाया, जैसे वो शिवशंकर की बात का मतलब समझ गया हो !
प्रोफेसर ताड़ गया कि दोनों के बीच आँखो हीं आँखो में कुछ बात हुई है ! इस बावत प्रोफेसर के सवाल करने पर शिवशंकर ने बता दिया कि इस केस में भी छुरी पर लगा हुआ खून किसी जानवर के द्वारा हीं चाटा गया था !
"तब तो"-सुन कर प्रोफेसर बोला-"इन दोनों हत्याओं के तार जरूर किसी न किसी रूप में एक दूसरे से जुड़े हुए हैं ! देख लीजिए, दोनों केसों में कितनी समानता है !"
सुनील ने प्रोफेसर से सवाल किया-"अब ये बताइए हुजूर कि इन दोनों केसों की बावत आपकी निजी राय क्या है? क्या ये दोनों हत्यायें सचमुच एक पिशाच-लीला थी?"
जवाब में प्रोफेसर ने सिगरेट का एक आखरी भरपूर कश लगाया ! नाक से धुआँ छोड़ी ! सिगरेट के बचे हुए टुकड़े को ऐश-ट्रे के हवाले किया, फिर बोला-"देखिये मि. सुनील, इसके बारे में पक्के तौर पर मैं कुछ नहीं कह सकता ! एक तरफ दिमाग इस नये जमाने में भूत-प्रेतों पर विश्वास करने को तैयार नहीं होता, वहीं दूसरी तरफ सारे सबूत और पहलुओं पर गौर करने के बाद दिल कहता है कि, ऐसा असंभव कारनामा भूत-प्रेत को छोड़ कर कोई इंसान कर हीं नहीं सकता ! आप जरा गौर करिए ! जब लाश बरामद की गई थी, तब कमरे की एकमात्र खिड़की और दरवाजा पूरी मजबूती के साथ अंदर से बंद था ! ये तो हो सकता है कि, कातिल अंदर सो रही मकतूला से दरवाजा खुलवा कर कमरे में प्रविष्ट हो गया ! उसके बाद उसने उसकी हत्या की ! लेकिन अंदर से दरवाजा खिड़की बंद होते हुए कत्ल करने के बाद वह कमरे से बाहर कैसे आ गया? ऐसा एक हीं सूरत में संभव हो सकता है कि अंदर कमरे में कोई इंसान नहीं बल्कि शैतान घुसा था !
हालांकि सुनने में ये बात अविश्वसनीय जरूर लगती है ! लेकिन ये असंभव नहीं है ! इस दुनिया में इससे पहले भी अनेक ऐसी घटनायें घट चुकी है, जिसमें भूत-प्रेतों की सक्रियता प्रमाणित हुई है ! दूसरी बात, कत्ल से दस-पन्द्रह दिन पहले से हीं उसके परिवार में भूत-प्रेत को लेकर कुछ विवाद चल रहा था !"
शिवशंकर ने सवाल किया-"क्या विवाद चल रहा था?"
"अपने कत्ल से दस-पन्द्रह दिन पहले से ही घर की बहु मकतूला फरीदा बार-बार कह रही थी कि, उसके बेडरूम में किसी अतृप्त-आत्मा ने डेरा डाल लिया था ! जबकि उनके घरवाले इस बात से इन्कार करते थे ! लेकिन जब इस बात को लेकर फरीदा परेशान रहने लगी ! तब परिवार के मुखिया सिकंदर आलम ने अपनी बहु फरीदा को ये विश्वास दिलाया कि वो इस मामले में गंभीरता से कोई कदम उठाएगा ! लेकिन सिकंदर आलम को मौका ही न मिला ! उससे पहले ही फरीदा का कत्ल हो गया !"

“एक मिनट रुकिए सर”-सुनील ने टोका-“अभी आपने कहा कि अपने कत्ल से दस-पन्द्रह दिन पहले से मकतूला फरीदा बार-बार कह रही थी कि, उसके बेड-रूम में किसी अतृप्त आत्मा ने डेरा डाल लिया था ! तो अब आपसे मेरा सवाल ये है कि, वो ऐसा किस बेस पर कह रही थी? क्या उसने अपने बेडरूम में किसी आत्मा को देखा था?”
“देखा तो नहीं था, लेकिन बकौल मकतूला वो बार-बार किसी अतृप्त भटकती हुई शैतानी प्रेतात्मा को अपने घर व बेड-रूम में महसूस कर रही थी !"
"कैसे.. कैसे महसूस कर रही थी?"
जवाब देने से पहले प्रोफेसर अपने दाहिने हाथ को कश लगाने की मुद्रा में अपने होंठों तक ले गया ! फिर जब उसे ये ध्यान आया कि उसकी उंगलियों में सिगरेट नहीं फँसी हुई थी, तब उसने दोबारा एक और सिगरेट सुलगाया ! फिर कश लगाते हुए बोला-"पहली दफा उसे ये अहसास तब हुआ, जब वो अपने बैड-रूम में लेटी सोने की कोशिश कर रही थी ! तब रात के कोई ग्यारह बज रहे होंगे कि अचानक सामने टेबल पर रखा टेलीविजन ऑटोमेटिक रूप से ऑन हो गया ! जिसे की मात्र दस मिनट पहले वो खुद अपने हाथों से बंद करके बिस्तर पर आई थी !”
“हो सकता है कि”-शिवशंकर बोला-“जल्दबाजी में उसने अच्छा से स्विच ऑफ न किया हो, या आन-आफ का स्विच खराब गया होगा ! जिसकी वजह से वो ऑटोमेटिक चालू हो गई होगी !"
"हो सकता है”-प्रोफेसर ने कबूल किया-“लेकिन अब दूसरी बात सुनिए ! इस घटना के सिर्फ़ दो दिन बाद वो रात को अपने पति शमीम के साथ अपने बेड-रूम में सो रही थी ! तब उसने अपने बेड-रूम के दरवाजे पर साफ-साफ पायल बजने की आवाज सुनी थी ! यूँ जैसे कोई नव-विवाहिता पायल पहने हुए उसके कमरे में आना चाहती हो ! उस वक्त उसने अपने पति शमीम से पूछा था कि बाहर दरवाजे पर कौन है? तब जवाब में शमीम कुछ न बोला ! लेकिन बाहर से आ रही पायल की आवाज दूर होती चली गई, जैसे कोई दूर जा रहा हो!"
कह कर प्रोफेसर चुप हो गया !
सुनील हँसा-“कमाल हो गया हजूर.. धोती को फाड़ के रूमाल हो गया ! मैने तो आज तक सिर्फ भूत-प्रेतों का नाम ही सुना था ! लेकिन आज पहली बार आपके मुखार-विंद से किसी भूत-प्रेत के कारनामे को भी सुन रहा हूँ !”
शिवशंकर ने सवाल किया-“आप एक बात बताइए ! आज इस घटना को बकौल आपके दस साल बीत चुके हैं ! तो बाद में घर के मुखिया सिकंदर आलम और उसके बेटे शमीम का क्या हुआ था?”
प्रोफेसर ने सिगरेट की जली हुई अग्र भाग को अपनी एक उंगली से झटक कर ऐश-ट्रे में गिराया-"शायद आप लोगों को विश्वास नहीं होगा ! लेकिन ये भी सच है कि अपनी बेगम के मरने के बाद लगभग एक महीने के अंदर ही घर के मुखिया सिकंदर आलम ने उसके गम में

अपने प्राण त्याग दिए थे ! परिवार में अकेला बच गया शमीम उसके बाद दुबारा गाँव में दिखाई न दिया ! उसके बारे में पक्के तौर पर किसी को भी पता नहीं चल सका कि, वो अपना मनहूस घर छोड़ कर कहीं चला गया था, या कहीं मर-खप गया था ! वैसे एक और दिलचस्प बात ये है कि, पोर्ट-लुई में आज भी वो मनहूस घर जिसमें सिकंदर आलम अपने पूरे घर- परिवार के साथ रहता था, खंडहर के रूप में मौजूद है!"

"क्यों"-शिवशंकर ने पूछा-"उस घर में कोई रहता नहीं है क्या? क्या सिकंदर के बेटे शमीम ने उसे बेंचा नहीं था?"

प्रोफेसर ने दोनों को ध्यान दिलाया-"ये भी एक प्वायंट है, जो यह इशारा करती है कि शमीम भी कहीं मर-खप गया होगा ! अगर वो जिंदा होता तो विरसे में मिले अपने पैतृक मकान और संपति को बिना बेंचे यूँ लावारिस हालत में छोड़ कर कहीं नही जाता !"

सुन कर सुनील ने अपनी आँखे बंद कर ली ! इसके बाद बड़ी देर तक कोई कुछ न बोला ! प्रोफेसर चुपचाप सिगरेट का कश लगाता रहा !

अपनी सिगरेट खत्म करके प्रोफेसर ने उसे ऐश-ट्रे में फेंकते हुए कहा-"हैरीटेज हॉस्टल हत्याकांड के बारे में मैंने न्यूज देख कर ही जाना ! तब मुझे मारीशश की वो घटना याद आ गई ! तो ऐसा लगा, जैसे दोनों घटनाओं के तार कुछ न कुछ जरूर आपस में जुड़े हुए हैं ! सोंचा, पुलिस को बता दूँ तो शायद उन्हें इस केस की इन्वेस्टीगेशन में आसानी हो ! सो आप लोगों को बुला कर मैंने सारी बातें बता दी ! अब ये आप लोगों के ऊपर है कि, इस केस के रहस्य की गुत्थी आपलोग किस तरह से सुलझाते हैं !"

प्रशंसात्मक भाव से प्रोफेसर को देखते हुए इंस्पेक्टर शिवशंकर बोला-"वैसे तो आज-कल के जमाने में हर कोई पुलिस और कोर्ट-कचहरी के झोल-झमेले से बचना चाहता है ! लेकिन ठीक इसके विपरीत एक जिम्मेदार नागरिक के तौर पर आपने जिस तरह पुलिस को सहयोग दिया, उसके लिए आप धन्यवाद के पात्र हैं ! और रही बात केस के रहस्य की गुत्थी सुलझाने की, तो वो हम जरूर सुलझाएंगे !"

प्रोफेसर हँसा-"अब तो इस केस की इन्वेस्टीगेशन मिस्टर सुनील जी भी कर रहे हैं ! तो भला कातिल अब कैसे बचा रह सकता है?"

जवाब में सुनील ने अपना सीना यूँ फुला लिया, जैसे वो खुद शरलॉक होम्स था !

[] [] []

सुनील अपने ऑफिस पहुँचा ! मालूम पड़ा, पाठक साहब कहीं बाहर गए थे ! सो वह अपने केबिन की ओर बढ़ गया ! रास्ते में पूजा सामने अपनी सीट पर बैठी हुई थी ! सुनील उसके नजदीक पहुँचा !

जवाब में अजीब सी निगाहों से सुनील को घूरते हुए पूजा बोली-"अच्छा, तो अब ये लक्षण हैं तुम्हारे?"

"क्या"-सुनील हकबकाया-"क्या लछन है मेरे? क्या किया है मैंने?"

"और पूछते हो क्या किया है? पहले तो उस बेचारी को तुमने अपने प्यार के जाल में फँसाया ! और फिर मतलब निकाल कर उसे आम के गुठली की तरह फेंक दिया !"
हकबकाते हुये सुनील बोला-"प्यार के जाल में फँसाया, मतलब निकाला ! अरे किसको देवी?"
"अच्छा"-किसी झगड़ालू औरत की तरह हाथ नचाते हुए पूजा बोली-"किसको? यानी कि हुजूर को ऐसे लड़कियों की अब गिनती भी याद नहीं ! इतने अनजान तो न बनो ! मैं हैरीटेज हॉस्टल हत्याकांड की मकतूला शीतल की जवान माँ सुधा राजपूत की बात कर रही हूँ ! छी.. छी.. लड़की नही मिल रही तो अब आंटी की उम्र की औरतों के साथ भी... ?"
"अच्छा देवी"-सुनील ने अपना माथा पीटा-"तो तुम उसकी बात कर रही हो ! लेकिन देवी, तुम तो जानती हो ! हम बजरंग बली के परम शिष्य है ! उसके साथ मेरा ऐसा-वैसा कोई सबंध नहीं है !"
पूजा ने शक भरी निगाहों से सुनील को देखा-"सच कह रहे हो?"
"कसम केजरी-बवाल की देवी, रूपये में सतरह आने सच कह रहा हूँ ! मैं कभी झूठ के बगल से भी नही गुजरा ! और मैं वैसी खराब नीयत का बंदा नहीं हूँ !"
"अभी नहीं हो तो क्या हुआ? वैसी नीयत का बनते कितना देर लगती है? और ये भी याद रखो, सीधी गाय ही पल्लू चबाती है !"
"लेकिन देवी तुम ये इल्जाम मेरे ऊपर किस बेस पर लगा रही हो !"
"क्योंकि"-पूजा ने बताया-"उसे तुम्हारे बिना खाना हजम नहीं हो रहा ! सुधा नाम की उस मैडम का कम से कम दस बार फोन आ चुका है ! जिद पकड़े बैठी है कि मुझे सुनील जी से बात करनी है ! सुनील जी.. माय फुट !"
उसने ब्यंग्य-पूर्ण भाव से मुँह बिचकाया !
"लेकिन उसने मेरे मोबाइल पर क्यों नहीं फोन किया?"
"मैंने बोला था ! लेकिन वो कह रही थी कि उनका मोबाइल नहीं लग रहा !"
"क्यों नहीं लग रहा?"
"वो तुम जानो ! कभी तुम भूल से अपना मोबाइल साइलेंट छोड़ देते हो ! कभी बैट्री चार्ज नहीं करते !"
सुनील ने जेब से अपना मोबाइल निकाल कर देखा ! और फिर माथा पीट लिया ! मोबाइल स्वीच ऑफ हो गया था ! मोबाइल वापस उसने अपनी जेब में रखा ! ठीक तभी पूजा की सीट के सामने टेबल पर रखी उसके मोबाइल की घंटी बजी !
"लो आ गया तुम्हारी सुधा मैडम का फोन ... !"
पूजा ने फोन उठाया !
"हैलो!"-वो कॉल रिसीव करके बोली !
उधर से कुछ कहा गया ! जवाब में पूजा ने मोबाइल सुनील को पकड़ा दी !

मोबाइल लेकर उसे दायें कान से सटाते हुए सुनील बोला-"ये हम बोल रहे हैं देवी... सुनील दी ग्रेट !"
उधर से सुधा की आवाज आई-"मिस्टर सुनील मैं सुधा बोल रही हूँ ! पहचाना मुझे... याद हूँ मैं आपको?"
सुधा के आखरी कथन 'याद हूँ मैं आपको' सुन कर बाजु में खड़ी पूजा के कान खड़े हुए !
"बिल्कुल देवी कहिए, क्यूँ याद किया आपने मुझे?"
"'मिस्टर सुनील"-उधर से सुधा का बेहद हड़बड़ाया सा स्वर उभरा-"मुझे आपसे एक जरूरी बात करनी है ! क्या आप अभी इसी वक्त मेरे घर आ सकते हैं?"
"अभी"-सुनील ने अपनी कलाई में बँधी रिस्ट-वॉच देखी ! साढ़े छः बज रहे थे, बोला-"अभी आउँ देवी?"
"जाओ जाओ"-पूजा जल-भुन गई-"रात उसके पहलू में हीं गुजारना!"
उधर से सुधा हिचकिचाई-"अभी .... ठीक है ! सुबह आ जाईए नौ बजे!"
"ओके देवी, अभी अंधेरा होने को है ! मैं कल सुबह नौ बजे से पहले आपके घर प्रकट हो जाऊँगा ! वैसे देवी, बात क्या है?"
"आप कल आइए तो सही .... मैं वो सब फोन पर नहीं बता सकती ! इतना हिंट दे देती हूँ कि बात मेरी बेटी की कत्ल के केस से संबंधित है!"
"ठीक है देवी, मैं सुबह आ जाऊँगा!"
"ओके!"
सुनील ने कॉल डिस्कनेक्ट कर दिया ! मोबाइल टेबल पर रख कर वो पूजा की तरफ घूमा ! पूजा फिर उसे घूर रही थी !
"सुनील जी"-वो ब्यंग्य-पूर्ण स्वर में सुधा के आवाज की नकल करती हुई बोली-"याद हूँ मैं आपको.. अभी मेरे पास आ सकते हैं? ...हह .. बहुत याद आ रही है उसे तुम्हारी !"
सुनील मुस्कुराया ! तनिक पूजा के नजदीक पहुँचा-"डार्लिंग बहुत जलन हो रही है उससे !"
"हह"-पूजा ने मुँह बिचकाया-"जाकर डुब मरो उसी चुड़ैल के पहलू मे, मुझे क्या?"
"अरे डार्लिंग तुम जो समझ रही हो, वो बात नहीं है !"
"फिर क्या बात है?"
सुनील ने तब उसे सुधा का सारा किस्सा विस्तार से सुनाया !
"ओह"'-बात समझ कर पूजा नरम हुई-"सॉरी डियर, मैं तुमको गलत समझ रही थी!"

[] [] []

अगले दिन सुबह सुनील मकतूला शीतल की माँ सुधा राजपूत से मिलने उसके घर पहुँचा ! अपनी गाड़ी उसके घर के सामने लगा कर वो गाड़ी से नीचे उतरा ! लेकिन फिर वह ठिठक गया ! नजर सामने लगी पुलिस वैन पर पड़ी ! सुधा के घर पुलिस क्यूँ आई थी? क्या माजरा था? किसी अनहोनी की आशंका से ग्रस्त धीरे से वह आगे बढ़ा !

पुलिस-वैन के पास पहुँच कर उसने एक भरपूर निगाह वैन के अंदर डाली ! वैन में तब अपनी ड्राइविंग-सीट पर सिर्फ ड्राइवर बैठा हुआ था ! अकेला....
सुनील चुपचाप आगे बढ़ गया ! दरवाजे पर पहुँच कर वो रूका ! अंदर की आहट लेने की कोशिश की ! दरवाजे से उसे अंदर कोई दिखाई न दिया ! सो वो चुपचाप दरवाजे को पार करके ड्राइंग-रूम में पहुँचा ! ड्राइंग-रूम में भी कोई न था ! डाइंग-रूम से होकर वो अंदर की तरफ बढ़ा ! उधर सामने से पुलिस का एक सब-इंस्पेक्टर आ रहा था ! सुनील को देखकर वो पुलिसिया लहजे में कड़क कर बोला-"अरे.....अरे कहाँ घुसे चले आ रहे हो जी ? इधर तुमको किससे मिलने का होता है जी?"
सुनील उसके लहजे की नकल करते हुए बोला-"हमको घर की मालकिन से मिलने का होता है जी !"
सब-इंस्पेक्टर ने बताया-"घर की मालकिन का कत्ल हो गया है ! हम लोग इधर मौका-ए-वारदात की छान-बीन करता जी !"
सुनील चौंका-"घर की मालकिन का कत्ल हो गया है?"
"जी हाँ"-सब-इंस्पेक्टर ने बताया-"वो अपने बेडरूम में मरी पड़ी है जी !"
सुनील बेड-रूम की तरफ लपका !
"खबरदार"-सब-इंस्पेक्टर उसका रास्ता रोक कर खड़ा हो गया-"उस कमरे में जाने का नहीं है ! वापस घुमो, वरना मेरा नाम सब-इंस्पेक्टर सचिन तेंदुलकर है ! और मैं इक्का-दुक्का नहीं सीधा छक्का लगा देता हूँ! मेरी बात नहीं माने तो सीधा बोल्ड आउट कर दूंगा ! बहुत लोगो को तो मैं कैच-आउट कर चुका हूँ ! समझया..!"
"समझया प्यारे"-सुनील बोला-"लेकिन मेरा भी नाम सुनील दी ग्रेट है ! वो तुम्हारा जो सीनियर इंस्पेक्टर शिवशंकर है न, तुम उसे फोन करो ! फिर तुम्हे पता चलेगा कि हम कितने पहुँचे हुए खलीफ़ा हैं!"
सब-इंस्पेक्टर सचिन तेंदुलकर ने ध्यान से सुनील को देखा, फिर सकपकाते हुए बोला-"श.. शिवशंकर सर आपको जानते है जी?"
"ठीक उतना हीं प्यारे, जितना तुम अपनी प्रेमिका फुलकुमारी को जानते हो !"
सब-इंस्पेक्टर बोला-"फिर तब तो आपको रोकने के लिए नहीं हो सकता जी ! नहीं तो शिवशंकर सर हमें ही कैच-आउट कर देंगे! चलिए हम दोनों मौका-ए-वारदात का मुआयना करते हैं!"
"इसका मतलब प्यारे अभी तुम भी अंदर नहीं गए हो?"
"कहाँ.. शिवशंकर सर ने मुझे या किसी को भी अंदर जाने से मना किया था जी!"
सुनील ने सहमति में सिर हिलाया ! दोनों सुधा के बेडरूम के पास पहुँचे ! बेड-रूम के दरवाजे पर पहुँच कर दोनों रुक गए !

बेडरूम का दरवाजा तब खुला पड़ा था! और सामने अंदर अपनी बेड पर घर की मालकिन सुधा राजपूत मरी पड़ी थी !
"ओह माय गॉड"-सुधा की लाश देख कर सब-इंस्पेक्टर सचिन तेंदुलकर हकबकाया-"इसे तो किसी ने रन-आउट कर दिया है जी!"
सुनील ने गौर से देखा ! सुधा की लाश चित अवस्था में बेड पर पड़ी थी ! लाश की आँखे अभी भी खुली थी, जो एकटक से दरवाजे की तरफ देख रही थी ! और उन पथराई आँखो में वो आतंक और डर का भाव स्थिर होकर रह गया था, जिसे देखने से साफ पता चलता था कि मरते समय मकतूला ने कोई बेहद डरावनी चीज देख ली थी ! लाश के जिस्म पर कहीं कोई घाव न था ! लाश एकदम से यूँ बिना कटी-फटी थी कि, लगता था जैसे वो सोई हो ! लाश के जिस्म पर से सुनील की निगाह फिसलती हुई लाश के दाहिने हाथ पर पड़ी, जिसमें एक छोटी सी रिवॉल्वर दबी हुई थी!
लाश के पास साईड में बेड पर गोलीयों के तीन बुलेट केस गिरे हुए थे ! जैसे फायर करने पर गिरते हैं! सुनील ने पूरे कमरे में निगाह दौड़ाई, मगर गोली चलने के उसे कही कोई निशान न दिखे !
मौत की तसदीक के लिए सुनील ने करीब जाकर सुधा की नाक के पास उंगली रखी ! साँस बन्द थी !
नि:संदेह वो मर चुकी थी ! सुनील ने कमरे में चारो तरफ निगाह दौड़ाई ! कमरा एकदम से सजा हुआ और व्यवस्थित था !
हर चीज अपनी-अपनी जगह पर करीने से मौजूद थी ! सुनील की देखा-देखी सब-इंस्पेक्टर सचिन तेंदुलकर भी लाश का मुआयना करते हुए बोला-"एक चीज हमको समझने के लिए नहीं हो रहा जी!"
घूम कर सुनील ने सचिन तेंदुलकर की तरफ सवालिया भाव से देखा !
सचिन तेंदुलकर की निगाह लाश पर फिरने लगी-"लाश के जिस्म पर कहीं कोई जख्म या निशान नहीं है ! फिर ये कैसे मरने के लिए हो सकती है जी?"
सुनील बोला-"मौत की वजह की पक्की जानकारी पोस्टमार्टम..!"
"हाँ"-बीच में हीं सुनील की बात काट कर सचिन तेंदुलकर चुटकी बजाते हुए बोला-"ये हो सकता है !"
सुनील ने पूछा-"क्या हो सकता है प्यारे?"
"हो सकता है कि ये लाश हीं न हो ! लाश के रूप में कोई रोबोट या बेबी-डॉल हो !"
जवाब सुन कर सुनील भौंच्चका सा सब इंस्पेक्टर सचिन तेंदुलकर को देखने लगा!
जबकि सचिन तेंदुलकर ने शान से अपने दिमाग की कनपटी अपनी दाँये हाथ की तर्जनी उंगली से ठकठकाया-"ये होने को सकता है भई, आखिर मेरे जैसे एक ब्रिलियंट इन्वेस्टीगेटर को हर एंगल से ठोक-बजा कर सोंचना पड़ता है !"

सुनील कुछ बोलता, इससे पहले हीं मेन गेट पर एक पुलिस-वैन के रुकने की आवाज सुनाई दी !
सुनील ने खिड़की से बाहर झाँका ! इंस्पेक्टर शिवशंकर अपनी पूरी पुलिस -पार्टी के साथ पुलिस वैन से उतर रहा था !
सुनील कमरे से निकल कर ड्राइंग-रूम में जाकर बैठ गया ! अगले एक मिनट में हीं शिवशंकर अपनी टीम के साथ ड्राइंग-रूम में दाखिल हुआ ! सुनील को देख कर वो चौंका-
"'मि. सुनील आप यहाँ कब आए?"
सुनील मुस्कुराया-"अभी पाँच मिनट पहले पहुँचा था भैया !"
"मेरा मतलब है कि, कत्ल की खबर आपको कैसे मिली?"
सुनील ने तब उसे बताया कि वो कत्ल की खबर सुन कर नहीं, बल्कि खुद मकतूला के बुलावे पर हीं उससे मिलने आया था !
"लाश देखी आपने?"
"कहाँ प्यारे, बस एक-दो सेकेंड के लिए एक झलक देखी ! अब साथ मिल कर देख लेंगे !"
शिवशंकर ने सहमति में सिर हिलाया ! सुनील शिवशंकर और पूरी पुलिस पार्टी के साथ दुबारा मौका-ए-वारदात वाले सुधा के कमरे में पहुँचा !
सबसे पहले पुलिस के डॉक्टर ने चैक करके सुधा के मौत की तसदीक की !
उसके बाद शिवशंकर के निर्देश पर पुलिस के फोटोग्राफर ने हर एंगल से लाश की तस्वीरें खींची !
शिवशंकर के निर्देश पर उसने लाश के चेहरे की भी एक क्लोज-अप फोटो खींची! खास करके लाश की आँखों को फोकस करके, जिन आँखों में जमाने भर का डर और आतंक का भाव स्थिर होकर रह गया था !
तस्वीरें खींच कर जब फोटोग्राफर पीछे हटा, तब पुलिस का फिंगरप्रिंट एक्सपर्ट सामने आया !
सबसे पहले उसने मार्कर पेन से बेड पर पड़ी लाश की पोजीशन मार्क की ! इसके बाद शिवशंकर के निर्देश पर उसके बताये गए जगहों पर से उसने उंगलियों के निशान लेने शुरू कर दिए ! बैड के पाये, बिजली-बोर्ड के स्वीच, दरवाजे के हैंडल, टेबल पर रखा गिलास, मकतूला के हाथ में दबी रिवाल्वर की ग्रिप, और फिर अंत में शिवशंकर के कहने पर उसने विंडो पर से भी फिंगर-प्रिंट उठाए !
सभी संभावित जगहों पर से फिंगर-प्रिंटस उठाने के बाद उसने फर्श पर से फुट मार्क्स भी उठाए !
इसी तरह करीब एक घंटे तक शिवशंकर आवश्यक रूटीन कार्यवाही में उलझा रहा ! एक घंटे बाद जब वो फारिग हुआ !

फिंगरप्रिंट एक्सपर्ट, डाक्टर, फोटोग्राफर आदि सब चले गए ! तब शिवशंकर ने सब-इंस्पेक्टर सचिन तेंदुलकर को भी लाश उठाने के लिए एम्बुलेंस भेंजने का निर्देश देते हुए वहाँ से थाने भेंज दी !
कमरे में लाश के साथ अब सिर्फ सुनील और इंस्पेक्टर शिवशंकर रह गए !
तब शिवशंकर ने एक बार फिर नये सिरे से लाश का मुआयना किया ! मुआयना करने के बाद वो सुनील से मुखातिब हुआ-"जैसा कि लाश पर कहीं भी किसी प्रकार का कोई जख्म नहीं है ! तो मि. सुनील .... आपके हिसाब से मौत की वजह क्या हो सकती है?"
लाश की आँखो को देखते हुए सुनील बोला-"वैसे तो पोस्टमार्टम रिपोर्ट में मौत की वजह क्लीयर हो हीं जाएगी, लेकिन मेरे अनुमान से तो इसकी मौत हार्ट-फेल हो जाने से हुई है ! जरा इसकी आँखो में स्थिर होकर रह गए आतंक और डर के भाव पर गौर करो ! साफ पता चल रहा है कि इसने इस कमरे में मौजूद कोई भयानक चीज देख ली थी ! जिसकी वजह से इसका हार्ट फेल हो गया !"
शिवशंकर बुदबुदाया-"कमरे में मौजूद भला इसने ऐसी कौन सी भयानक चीज देख ली थी?"
सुनील के पास फिल्हाल इस सवाल का जवाब नहीं था !
शिवशंकर ने उससे पूछा-"मकतूला ने आपको यहाँ किस लिए बुलाया था?"
"वो मुझसे शीतल के कत्ल के बारे में कोई जरूरी बात बताना चाहती थी ! इस संदर्भ में उसने मेरे ऑफिस में कल शाम को फोन भी किया था !"
शिवशंकर सोंचने लगा-"इस संदर्भ में वो आपको ऐसी कौन सी जरूरी बात बताना चाहती थी?"
सुनील ने ये संभावना जताई-"जरूर उसे कत्ल से सबंधित कोई महत्वपूर्ण सुराग मिल गया होगा ! उसे कुछ ऐसी बात पता चल गई होगी, जिससे शीतल के कत्ल के उस अजीबो-गरीब रहस्य पर से पर्दा उठ सकता था ! और इसी डर से कातिल ने इसकी हत्या कर दी ! इसे इतना आतंकित कर दिया कि, इसका हार्ट-फेल हो गया ! अफसोस प्यारे मुझे कल हीं जब इसने फोन किया था, यहाँ आकर इससे मिल लेना चाहिए था !"
"लेकिन"-शिवशंकर ने बेड पर गिरे गोलियों के बुलेट केस को उठाया-"जैसा कि दिख रहा है, मकतूला ने ये गोलियाँ किस पर चलाई थी?"
"जाहिर है"-सुनील ने जवाब दिया-"उसी पर, जो इस कमरे में घुसा था !"
"कैसे"-शिवशंकर ने सवाल दागा-"दरवाजा जब अंदर से बंद था, तो फिर बाहर से कोई अंदर कैसे घुस गया? थोडी देर के लिए ये मान लें कि दरवाजा कातिल के लिए खुद मकतूला ने खोला होगा ! लेकिन ये सवाल फिर भी अपनी जगह कायम है कि कत्ल करने के बाद कातिल बिना दरवाजा खोले बाहर कैसे निकल गया? सनद रहे, जब लाश बरामद हुई थी ! तब भी दरवाजा अंदर से पूरी मजबूती के साथ बंद था?"

सुनील बुदबुदाया-"घुमा-फिरा कर फिर तो एक ही संभावना बचती है कि कमरे में कोई इंसान नही बल्कि शैतान घुसा था ! क्योंकि यहाँ जो दिख रहा है, वो कर पाना किसी आदम-जात के लिए संभव नहीं है ! और इस शैतान वाली थ्योरी को बल देने वाली एक बात और है !"

"वो क्या?"-शिवशंकर ने पूछा !

शिवशंकर के हाथ से गोलियों के खोंखे को लेकर उसे ध्यान से देखते हुए सुनील ने जवाब दिया-"इन बुलेट केस को देखो ! जाहिर है कि मकतूला ने अपने बचाव में कातिल पर गोलियाँ चलाई ! कमरे की दीवारों या दरवाजे में कहीं भी गोली नहीं लगी है ! स्पष्ट है कि गोली कातिल को हीं लगी होगी ! फिर सवाल ये बनता है कि गोली कातिल को लगने के बाद कमरे में खून क्यूँ न गिरा? तीन-तीन गोलियाँ लगने के बावजूद कातिल इस कमरे से स-कुशल बाहर कैसे निकल गया? ऐसा एक ही सूरत में संभव है कि कातिल कोई इंसान नहीं शैतान था !"

“मिस्टर सुनील"-शिवशंकर बोला-"क्या आप भूत-प्रेत या आत्माओं के अस्तित्व पर विश्वास रखते हैं?"

एक सेकेंड के लिए रूक कर सुनील ने शिवशंकर के सवाल पर गौर किया ! फिर सोंच-समझ कर उसने नपे-तुले शब्दों में जवाब दिया–“देखो प्यारे, सच पूछो तो इससे पहले मैं भूत-प्रेतों पर जरा भी विश्वास नहीं करता था ! लेकिन जबसे मैंने इस केस को पकड़ा है, तबसे ऐसी-ऐसी घटनायें घट रही है कि इस विषय पर मुझे फिर से सोंचना पड़ रहा है ! और तब से मैं इस विषय पर डबल-माइंड हो गया हूँ ! एक तरीके से सोंचता हूँ तो दिमाग कहता है कि जो चीज मैंने देखी नहीं, उस पर कैसे विश्वास कर लूँ? वहीं दूसरे तरीके से जब सोचता हूँ तो दिल कहता है कि धरती पर किसी चीज का अस्तित्व होता है ! तभी तो दुनिया में उसका नाम प्रचलन में आता है ! दिमाग जब कहता है कि बिना आँखों से देखे किसी भी चीज पर विश्वास मत करो ! तब उस समय दिमाग के किसी कोने से आवाज आती है कि ईश्वर,प्रेम,मिठास और हवा की तरह ऐसी बहुत सी वस्तुयें है, जो दिखाई नहीं देती ! सिर्फ महसूस की जाती है ! और उन्हीं वस्तुओं में से एक वस्तु आत्मा भी है! जो अपनी परालौकिक शक्तियों के कारण जब अदृश्य हो जाती है, तब उसे सिर्फ महसूस किया जा सकता है !"

जवाब सुन कर शिवशंकर कुछ न बोला ! अगले आधे घंटे तक दोनों ने मिल कर पूरा बेडरूम छान मारा ! लेकिन उनके काम की एक भी वस्तु उन्हें वहाँ से नहीं मिली ! अलबता तब तक लाश को उठाने के लिए मोर्चरी की वैन वहाँ जरूर पहुँच चुकी थी ! शिवशंकर लाश को उठवा कर उस मकान को सील करके सुनील के साथ वहाँ से रुख्सत हुआ !

[] [] []

अगले दिन दोपहर बाद …

तब जबकि लाश की पोस्टमार्टम-रिपोर्ट आई! पोस्ट-मार्टम रिपोर्ट लेकर सब-इंस्पेक्टर सचिन तेंदुलकर शिवशंकर के पास पहुँचा ! रिपोर्ट उसने शिवशंकर के हवाले की ! रिपोर्ट लेकर शिवशंकर ने ध्यान से रिपोर्ट का मुआयना किया ! रिपोर्ट पढ़ चुकने के बाद उसने सब-इंस्पेक्टर से सवाल किया-"सुधा की लाश को क्लेम करने के लिए उसका कोई रिश्तेदार सामने आया?"

"सर.. सुधा की लाश क्लेम करने उसका होने वाला जोकि हो न सका, दामाद आया था ! उसी टाइम में हम उसको बोला था कि आधे-एक घंटे बाद कुछ पेपर-वर्क और पुलिस की खानापूरी निपटा कर लाश उसे देने के लिए हो सकता है जी ! तब उसी टाइम में हम एक घंटे बाद आएगा, ऐसा बोल के वो चला गया ! अच्छा सर, आप एक बात बताओ जी !"

शिवशंकर ने सवालिया भाव से उसे देखा !

सचिन तेंदुलकर ने सवाल किया-"कल सुनील करके एक प्राइवेट जासूस, जो सुधा की कोठी पर आया था ! क्या आप उसे जानते हैं जी?"

"हाँ"-शिवशंकर बोला-"जानता हूँ !"

"उसने बोला था सर कि आप भी उसे जानते थे ! अच्छा हुआ आपने बता दिया, नहीं तो मैं अभी जाकर उसे कैच-आउट कर देता जी !"

शिवशंकर ने एक बार उसे घूरा–"ओके, यू कैन गो नाउ !"

"ओके... हम जाता जी!"-सब-इंस्पेक्टर सचिन तेंदुलकर चला गया !

ठीक तभी सुनील वहाँ पहुँचा ! शिवशंकर के सामने पहुँच कर वो एक खाली कुर्सी पर पसर गया !

सुनील को देखकर शिवशंकर मुस्कुराया !

"कहो कैलाशपति प्यारे !"

"मिस्टर सुनील"-शिवशंकर बोला-"पोस्ट-मार्टम की रिपोर्ट आ गई है ! आप भी देख लीजिए !"

कह कर शिवशंकर ने रिपोर्ट की पेपर सुनील को पकड़ा दी !

रिपोर्ट लेकर सुनील ने उसे ध्यान से पढ़ा ! पूरी रिपोर्ट पढ़ चुकने के बाद वह विजेता के से स्वर में शिवशंकर से बोला-"देखा प्यारे, मेरा अनुमान सही निकला ! इसमें मौत की वजह साफ-साफ लिखा है-हार्ट फेल विथ मोर फियर ..... मने अत्यधिक डर के कारण हार्ट फेल ! रिपोर्ट में मौत का समय घटना वाली रात को एक से दो बजे के बीच में पिन-प्वायंट की गई है!"

"हो सकता है"-शिवशंकर बोला-"मकतूला हाई-ब्लड प्रेशर से पीड़ीत हो ! और घटना वाली रात को उसके खिड़की के पास कोई चोर आया, जिसे देख कर वो जरूरत से ज्यादा डर गई होगी ! कुछ लोग जरूरत से ज्यादा डरपोक होते हैं ! और उस स्थिति में बजाय चोर को पकड़ने के वो खुद डर जाते हैं !"

सुनील ने मजबूती से इन्कार में सिर हिलाया-“तुम्हारी ये दोनों बाते गलत हैं प्यारे … सुनो ! तुम्हारे कथनानुसार अगर मकतूला को हाई ब्लड प्रेशर होता, तो इस रिपोर्ट में ये बात जरूर आती ! दूसरी बात …कत्ल की रात को मकतूला के कमरे में या खिड़की के पास कोई नहीं गया था!"

शिवशंकर की आँखे तनी-"ऐसा आप पूरे विश्वास के साथ कैसे कह सकते है?”

"सुनो प्यारे पहली बात, पुलिस जब सबसे पहले मौका-ऐ-वारदात पर पहुँची थी ! तब मौका-ए-वारदात वाली सुधा का वो बेड-रुम भी अंदर से बंद था ! खुद पुलिस ने हीं दरवाजा तोड़ कर सुधा की लाश बरामद की थी ! सो ये दावा भी गलत साबित हो जाता है कि कमरे के अंदर कोई गया था ! दूसरी बात, खिड़की पर भी बाहर से कोई नहीं था ! मैने सामने सड़क पर लगे सीसी कैमरे की घटना वाली रात की फुटेज चैक की है ! रात भर की फुटेज में खिड़की के पास कोई इंसान नहीं दिखा ! खिड़की के रास्ते से भी कोई अंदर-बाहर नहीं गया हो सकता था ! क्योंकी तुमने खुद देखा, खिड़की पर लोहे के जाले लगे हुए हैं!"

बेवकूफों की तरह शिवशंकर बड़बड़ाया-‘कमरे में कोई गया नही, खिड़की पर कोई था नही, मकतूला का ब्लड प्रेशर हाई भी नहीं था ! फिर आखिर उसने कमरे में ऐसा क्या देख लिया? जिससे डर कर उसका हार्ट-फेल हो गया ! आखिर कमरे में कुछ न कुछ तो जरूर था, जिसे देख कर सुधा ने उस पर गोली चलाई!"

सुनील के पास फिलहाल इस सवाल का जवाब न था ! रिवॉल्वर की बावत उसने शिवशंकर से पूछा–"मकतूला के हाथ में फँसी रिवॉल्वर और बुलेट केस के बारे में फोरेंसिक-एक्सपर्ट की रिपोर्ट क्या कहती है?"

शिवशंकर ने बताया-“फोरेंसिक-एक्सपर्ट की रिपोर्ट के मुताबिक वो सारे खोंखे उसी रिवॉल्वर से चली गोलियों के थे ! रिवॉल्वर की बावत भी मैं पता कर चुका हूँ ! वो ब्रिटिश कंपनी ‘वेब्ले एंड स्कॉट’ की 0.32 कैलीबर रिवॉल्वर मकतूला के नाम पर हीं रजिस्टर्ड थी !"

सुनील सोंचने लगा-“फिर तो इससे इस संभावना को और बल मिलती है कि रीयल में मकतूला के बंद कमरे में कोई घुसा था !"

अपने सिर के बाल लगभग नोंचता हुआ शिवशंकर बोला-“फिंगर-प्रिंट एक्सपर्ट की भी रिपोर्ट आ गई थी ! रिपोर्ट के मुताबिक मकतूला के बेड-रूम में वैसे तो पूराने पड़ चुके एक दो और लोगो के फिगर-प्रिंट और फुटमार्क्स मिले हैं, लेकिन ताजे मिले फुट-मार्क्स और फिंगर-प्रिट मकतूला को छोड़ कर बाकी किसी और के नहीं मिले! जाहिर है कि कोई इंसान का बच्चा घटना के दिन उस कमरे में नहीं गया था !"

बहुत सोंच-समझ कर सुनील बोला–"देखो प्यारे, अगर इस केस के रहस्य तक हमें पहुँचना है, तो हमें सबसे पहले ये मान कर चलना पड़ेगा कि ये दोनों हत्यायें कोई पिशाच-लीला नही, बल्कि किसी इंसान का काला कारनामा था !"

"चलो मान लिया”-शिवशंकर बोला-“अब आगे आपकी क्या योजना है?"

"मकतूला के मोबाइल की कॉल-हिस्ट्री चैक की तुमने? घटना वाले दिन उसने अपने मोबाइल से किस-किस से बात की थी?"
"हाँ"-शिवशंकर बोला-"मैंने चैक किया था ! घटना वाले दिन मकतूला सुधा ने अपनी मरहूम बेटी के भावी पति सुरेश पटनायक और किसी तांत्रिक सुलेमान से बार-बार बात की थी !"
"ये सुलेमान किस खेत की चिड़ियाँ है प्यारे?"
"पता नही, लेकिन साफ प्रतीत होता है कि मकतूला सुधा इस सुलेमान जो नाम से हीं कोई तांत्रिक प्रतीत होता है, के चक्कर में पड़ी हुई थी!"
"लेकिन अब सवाल ये उठता है कि सुधा उस तांत्रिक के चक्कर में क्यों पड़ी हुई थी?"
"इसकी वजह कुछ-कुछ मेरी समझ में आ रहा है मिस्टर सुनील!"
"क्या समझ में आ रहा है प्यारे?"
"देखिए मिस्टर सुनील"-शिवशंकर अनुमान लगाते हुए बोला-"मेरी समझ तो ये कह रही है कि जिस तरह अजीबो-गरीब तरीके से मकतूला सुधा की बेटी शीतल का कत्ल हुआ था, उससे मकतूला सुधा को ये पक्का विश्वास हो गया था कि शीतल की हत्या एक पिशाच-लीला हीं थी ! सो इसी कारण-वश उसकी मदद लेने के लिए वो तांत्रिक सुलेमान से मिली होगी ! सुलेमान ने भी उसे ये विश्वास दिलाया होगा कि जिस प्रेत या पिशाच की वजह से उसकी बेटी मरी ! वो उस प्रेत या पिशाच को काबू में करके रहेगा !"
"बिल्कुल रूपये में एक सौ एक पैसा सही बात कही प्यारे ! ये लो अपना इनाम साढ़े दो किलो की वाह-वाही का पैकेट !"
और सचमुच सुनील ने देने के अंदाज में अपना दोनों हाथ उसकी तरफ बढ़ाया !
शिवशंकर सुनील की बात पर मुस्कुराए बिना न रह सका, बोला-"मिटर सुनील, अब हमें इस तांत्रिक सुलेमान से मिलना चाहिए !"
"बिल्कुल प्यारे .. हम भी देखना चाहते है कि ये तांत्रिक सुलेमान किस खेत की चिड़ियाँ है !"

[] [] []

तांत्रिक सुलेमान के पते पर सुनील और शिवशंकर दोनों उसके आवास पर पहुँचे !
तांत्रिक सुलेमान का एड्रेस प्राप्त करने में उन्हें कोई विशेष परेशानी नहीं हुई थी ! शिवशंकर को जब ऐड्रेस हासिल करने में देर हुई ! तब सुनील ने उसके एक मुरीद की हैसियत से सुलेमान के मोबाइल पर फोन करके कहा था कि वो अपने विवाहित-जीवन में संतान सुख से वंचित था ! सो उसे उनकी करम और मदद की जरूरत थी ! अतः उनका खूब नाम सुन कर उसने फोन किया था ! और अब वो उनसे मिलना चाहता था ! तब सुलेमान ने सुनील को मिलने के लिए अपना एड्रेस दे दिया था !
तांत्रिक सुलेमान के विशाल और भव्य आवास के कंपाउंड में शिवशंकर ने गाड़ी रुकवाई !

दोनों गाड़ी से नीचे उतरे ! और पैदल चल कर वे मुख्य दरवाजे तक पहुँचे ! दरवाजे पर पहुँच कर दोनों रूक गए ! दरवाजा अंदर से बंद था !
सुनील ने हाथ आगे बढ़ा कर दरवाजे पर लगा कॉलबेल का स्वीच दबाया ! अंदर बंगले में कहीं बड़ी ही शानदार संगीतमय घंटी की आवाज गूंज उठी ! सुनील ने यूँ दो बार स्वीच दबा कर घंटी बजाई !
करीब पाँच मिनट के लंबे इंतजार के बाद दरवाजा खुला ! और दरवाजे पर तांत्रिक सुलेमान प्रकट हुआ !
माथे पर जालीदार टोपी... काले वस्त्र...
एक कहावत है कि भेष के अनुसार ही भीख मिलती है ! मतलब भीख लेने के लिए भी उसी के अनुसार भेष बनाना पड़ता है ! सुलेमान ने एक तांत्रिक के हिसाब से भेष बना भी रखा था !
दरवाजे पर पुलिस को देखकर वह हड़बड़ाया–"मेरे आश्रम में पुलिस का क्या काम ?"
शिवशंकर आगे बढ़ कर बोला-"हमें आपसे कुछ बात करनी है !"
टेढी दृष्टी से शिवशंकर को देखते हुए सुलेमान बोला-"क्या बात करनी है बंदे?"
"हुजूर"-सुनील बोला-"अंदर तो आने दीजीए !"
"अंदर आकर क्या करोगे ? जो कहना है, यहीं से कहो, और रुख़्सत हो जाओ !"
"अंदर बैठ कर"-सुनील बोला-"आराम से तुम्हारे साथ बकबकासन करेंगे हुजूर !"
"बकबकासन ?"- सुलेमान हड़बड़ाया !
"हाँ हुजूर, इस आसन में दो-चार लोगों के साथ बैठ कर इधर-उधर की बकबकी की जाती है ! ये आसन मैंने रामदेव के गुरू बाबा आरामदेव से सीखी थी !"
सुलेमान को कोई जवाब न सुझा ! वो सुनील को यूँ देखने लगा, जैसे सुनील कोई इंसान न होकर ऐलियन था !
उसकी अनिच्छा के बावजूद भी शिवशंकर और सुनील अंदर प्रविष्ट हुए ! सुलेमान अनिच्छा-पूर्वक उनके पीछे-पीछे चलने लगा ! फिर आगे होकर वो उन्हें अपने उस विशेष कमरे में ले गया, जिसमें वह अपने तंत्र-मंत्र के प्रयोग करता था !
कमरे में एक तरफ तंत्र-मंत्र की चीजों के साथ एक मानव खोंपड़ी रखी हुई थी ! बैठने के लिए कमरे में सिर्फ एक कंबल थी, जो फर्श पर बिछी हुई थी ! जिसकी तरफ इशारा करते हुए सुलेमान बोला-"बैठो बच्चा... तशरीफ रखो !"
दोनों बैठ गए !
शिवशंकर बोला-"हम एक कत्ल की तफ्शीश के सिलसिले में आपसे बात करने आए हैं !"
"कत्ल"- सुलेमान की द्रष्टि टेंढ़ी हुई-"अरे बच्चा, किसी के कत्ल से भला हमारा क्या लेना देना?"
शुष्क स्वर में शिवशंकर बोला-"लेना-देना क्यूँ नहीं है? किसी का कत्ल हुआ है !"

और इंस्पेक्टर शिवशंकर ने उसे सुधा के कत्ल के बारे में बताया ! सुनने के बाद सुलेमान सीधे-सीधे अक्खड़ लहजे में बोला-“मैं किसी सुधा नाम की मोहतरमा को नहीं जानता !”
शिवशंकर ने सवाल किया-"अगर आप सुधा को नहीं जानते थे, तो उसके मोबाइल में आपका नंबर कैसे था? फोन पर उससे बातें कैसे करते थे?”
“देखो बच्चा”-सुलेमान बोला-“इस शहर में हमारे सैंकड़ों मुरीद हैं! जरूरत पड़ने पर सभी हमसे बात करते हैं! मैं नाम से किस-किसको याद रख पाऊँगा ! हो सकता है, उससे भी मेरी इसी तरह बात हुई हो !"
"ठीक से याद कीजिए .. फिर बताइए !"
“ठीक से हीं बता रहा हूँ, मुझे बिल्कुल याद नहीं… और मैं उस मोहतरमा को व्यक्तिगत रूप से नहीं जानता !"
"मैं”-शिवशंकर बोला-“आपके बंगले की तलाशी लेना चाहता हूँ !"
कुटिल भाव से सुलेमान बोला-"शौक से तलाशी लो, लेकिन पहले सर्च-वारंट लेकर आओ !"
“अरे हुजूर”-सुनील बोला-“जब आप सही हो, बंगले में कुछ गलत नहीं होता तो बच्चे को क्यों नहीं लेने देते तलाशी?"
सुनील की बात पर एक क्षण के लिए सुलेमान सकपकाया ! फिर सहज होते हुए बोला-"ये बात नहीं है बच्चे, यूँ तलाशी मुजरिमों के घर की ली जाती है! तलाशी होने पर मेरी बदनामी होगी !"
“बहुत अच्छे जनाब”-सुनील बोला-“फिर हम लोग जा रहे हैं ! कुछ याद आए तो बाद में बता दीजिएगा !"
"जरूर !”-सुलेमान बोला !
सुनील और शिवशंकर उसके आवास से बाहर निकल गए ! बाहर आकर अपनी पुलिस वैन की तरफ बढ़ते हुए शिवशंकर बोला-"मिस्टर सुनील, आपने उसे इतनी आसानी से क्यूँ छोड़ दिया? वो साफ-साफ झूठ बोल रहा है ! हमें उससे सख्ती करके पूछना चाहिए था !"
“कोई फायदा नहीं होता प्यारे,ये काफी घुटा हुआ आदमी है ! उस पर ज्यादा सख्ती करोगे तो वो धार्मिक कार्ड खेल जाएगा !"
क्रोथ व बेवस स्वर में वैन का गेट खोलते हुए शिवशंकर बोला–"तो क्या उसे ऐसे ही छोड़ दें ! ये जानते हुए कि वो इस केस से सबंधित कुछ महत्वपूर्ण जानकारी हमसे छुपा रहा है !"
"मैने कब कहा प्यारे कि उसे छोड़ दो”-वैन में बैठता हुआ सुनील बोला-"मैंने उसे अभी सिर्फ ढील दी है ! उसके बाद देखना, उसे खींचता कैसे हूँ !"
पुलिस वैन वहाँ से चल पड़ी ! शिवशंकर उलझन में पड़ गया-"खीचता कैसे हूँ? मैं समझा नहीं !"
"सब समझ जाओगे प्यारे, बस बगुले की तरह मछली देखो, और मछली की चाल देखो !”

“आप”-शिवशंकर ध्यान से सुनील को देखने लगा-"आप कोई गैर-कानूनी काम तो नहीं करेंगे मिस्टर सुनील?"
"बिल्कुल नहीं प्यारे, मैं और गैर-कानूनी काम? मैं तो कानून का ठीक उसी तरह सम्मान करता हूँ, जैसे पहली और दूसरी बार ससुराल पहुँचे दामाद जी का सम्मान किया जाता है !"
शिवशंकर कुछ बोलने वाला था कि तभी एकाएक सुनील फिर बोला-“वैन यहीं रोक दो प्यारे !"
शिवशंकर अचकचाया-“क्या हुआ मिस्टर सुनील ?”
"मुझे यहीं उतरना है !”
"ओके. !”
शिवशंकर ने वैन रुकवाई ! सुनील वहीं उतर गया ! वैन आगे बढ़ गई ! जिस जगह सुनील उतरा था, वो जगह कॉल-गर्ल के लिए बदनाम एक रेड-लाईट एरिया थी !

[] [] []

अगले दिन... रात नौ बजे !
भोजन करके सुलेमान अभी बेड पर जाने की सोंच हीं रहा था कि ठीक तभी मेन-गेट पर लगे कॉल-बेल की घंटी बजी !
स्पष्ट था कि बाहर से किसी ने दरवाजे पर लगी कॉल-बेल की स्वीच दबाई थी ! बेड की तरफ जा रहा सुलेमान रुक गया !
भला इस वक्त कौन आया हो सकता था? कुछ सोंच कर वो दरवाजे की तरफ बढ़ा ! कौन आया हो सकता है?
सोंचते हुए वो मुख्य दरवाजे तक पहुँचा, और दरवाजा खोला ! और दरवाजा खोलते हीं उसकी सारी आलस्य,सारी नींद उड़ गई ! सामने दरवाजे पर एक अनिध सुंदरी खड़ी थी !
उसे देख कर उसे ये विश्वास ही न हुआ कि कोई स्त्री इतनी सुंदर भी हो सकती है ! एक मिनट के लिए वह पलकें झपकाना तक भूल गया !
सौंदर्य ऐसा कि कामदेव की स्त्री रति भी उसके सामने पानी भरती नजर आए ! ऐसे कपड़े पहने थे उसने कि सुलेमान के सीने पर साँप लोट गया !
मुग्ध होकर वो उसे निहारने लगा !
वो एक हल्के ग्रीन कलर की साड़ी पहनी हुई थी ! इतनी झीनी की पेटीकोट के साथ-साथ पूरा पेट और नाभी साफ-साफ दिख रहा था !
ब्लाउज इतनी लो-कट की आधे स्तन और इतनी झीनी की अंदर की काली ब्रा साफ दिख रही थी !
एक बार सुलेमान का मन हुआ कि वो आगे बढ़ कर उसे दबोच ले ! बड़ी मुश्किल से उसने खुद पर कंट्रोल किया !
वो अपनी शहद सी मीठी आवाज में बोली-"मुझे आलिम जी से मिलना है !"

"कहो कन्या, हम हीं आलिम सुलेमान हैं!" जवाब में सुंदरी आगे बढ़ कर सुलेमान के सामने अदब से झुकी ! इस क्रम में उसकी पैंटी के इलास्टिक की आकृति साड़ी के ऊपर से उसके हैवी कूल्हों पर स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर हुई ! झुक कर उसने बड़े अदब से सुलेमान को सलाम किया !
सुलेमान फुल कर कुप्पा हो गया ! रहमत के बहाने उसने सुंदरी के सिर पर हाथ रख कर दो बार सहलाया, और दुआ दी–"खुशकिस्मत हो !"
सलाम करके जब सुंदरी सीधी खड़ी हुई, उसका चेहरा उदास हो चुका था ! रोआंसी स्वर में वो बोली-"सौभाग्य हीं तो हमसे रूठ गया है आलिम जी !"
स्नेह दिखाने के बहाने सुलेमान ने फिर से उसके सिर को सहलाया-"क्या हुआ मोहतरमा, क्या तकलीफ है?"
उदास स्वर में वो बोली-"तकलीफ है तभी तो आपके दर पर आई हूँ !"
कसे हुए ब्लाउज और ब्रा के अंदर से बाहर निकलने को बेताब उसकी सुडौल बड़ी-बड़ी छातियों को कामुक निगाहों से देखते हुए सुलेमान ने सवाल किया-"क्या तकलीफ है मोहतरमा या रूको.. पहले अंदर चल कर तशरीफ रखो !"
सुंदरी खुले दरवाजे से अंदर प्रविष्ट हुई ! पीछे सुलेमान ने पुनः दरवाजा बंद कर लिया ! सुंदरी को लेकर वो अपने बेड-रूम में पहुँचा ! बेड पर उसे बैठा कर खुद भी उससे सट कर बैठ गया !
सुलेमान ने चोर नजरों से उसके पूरे बदन का एक्सरे किया-"अब कहो मोहतरमा, क्या कष्ट है?"
"जनाब"-परेशान स्वर में वो बोली-"शहर में आपका बहुत नाम सुना था ! इसी लिए मैं बड़ी आशा लेकर आपके पास आई हूँ !"
"निराश न हो मोहतरमा, तुम्हारी हर तकलीफ दूर होगी ! अपनी तकलीफ बताओ!"
"मेरे पति मुझे तलाक दे रहे हैं!"
"क्यूँ?"
थोड़े सकुचाते हुए वो बोली-"आलिम जी, मेरा नाम कामिनी है! कामिनी सक्सेना, ग्रेटर नोयेडा में रहती हूँ! मेरी शादी को पाँच साल हो गए ! लेकिन अभी तक ..!"
आखिरी वाक्य कहते-कहते उसका स्वर भींग गया ! सुलेमान ने अपनापन दिखाते हुए कामिनी के कंधे पर हाथ रख दिया-"चिंता न करो मोहतरमा, हम समझ गए ! तुम्हारी इच्छा जरूर पुरी होगी !"
कह कर सुलेमान तुरंत आसन लगा कर ध्यान की मुद्रा में बैठ गया ! यूँ दो मिनट उसने बगुला-ध्यान लगाया !
दो मिनट बाद उसने आँखे खोली और कहा–"मोहतरमा,हमने अभी-अभी तिलिस्म विधा के जरिए जाना है कि तुम्हारे पति के नसीब में संतान सुख नहीं है !"

कामिनी उदास हो गई ! रूआँसे स्वर में वो बोली-“यानी की मैं आजीवन बाँझ बन कर रहूंगी !"
“पगली”-उसे समझाते हुए सुलेमान बोला–“हमने सिर्फ ये कहा है की तुम्हारे शौहर... ध्यान दो सिर्फ तुम्हारे शौहर के नसीब में संतान सुख नहीं है !"
“जी”-कामिनी हकबकाई-“आप वही कहना चाहते हैं न जो मैं समझ रही हूँ!"
"हाँ मोहतरमा, मैं वही कहना चाहता हूँ! किसी दुसरे पुरुष के ताल्लुकात से तुम जरूर माँ बन सकती हो !"
कामिनी फिर हकबकाई-“ल..लेकिन.. ये पाप है !"
"अच्छे मकसद हेतू किया गया पाप, पाप नहीं होता, सोचों..अगर ऐसे तुम माँ बन जाती हो तो तुम्हारा घर उजड़ने से बच जाएगा !”
"लेकिन...!"
"लेकिन-वेकिन कुछ नहीं मोहतरमा, इसी में तुम्हारी बेहतरी है ! नहीं तो बाद में तुम बहुत पछताओगी !"
"लेकिन आलिम जी"-कामिनी शरमाई-"पराये मर्द मेरे माँ बनने के बाद भी मुझे ब्लैकमेल करेंगे !”
"बिल्कुल नहीं मोहतरमा”-सुलेमान बोला-“तुम माँ बन जाओगी, उसके बाद मैं तुम्हे फोन भी नहीं करूंगा !”
कामिनी उछल पड़ी ! उठ कर खड़ी हो गई वो ! ताज्जुब से वो अपनी कजरारी आँखो से सुलेमान को देखने लगी ! उसे यूँ अपनी तरफ देखता पाकर सुलेमान निहाल हो गया !

[] [] []

सुबह के नौ बज चुके थे ! सुलेमान रात भर नहीं सोया था ! सो वह अभी तक गहरी नींद में सो रहा था !
कामिनी अभी भी उसके पहलू में थी ! इस वक्त भी दोनों के जिस्म पर कपड़े का एक धागा तक न था ! कामिनी जैसी सुंदरी के खेत में खूब जी भर के हल चलाने के बाद सुलेमान के चेहरे पर इस समय तृप्ती के ठीक वही भाव थे, जो भाव भर कटोरी मलाई खा चुकी बिल्ली के चेहरे पर होती है ! सुलेमान ने आज तक जितनी भी सुंदरीयों को भोगा था, कामिनी उन सबसे अलग निकली थी ! रात के उस खेल में जिस तरह से कामिनी ने उसका साथ दिया था, उसे जो सुख दिया था, उसे पाकर वो निहाल हो चुका था ! तभी कॉल-बेल की घंटी बजी !
घंटी की आवाज सुन कर सुलेमान की आँख खुली ! वो तुरंत उठ कर खड़ा हुआ ! तब तक घंटी दो बार और बजी ! हड़बड़ा कर उसने धोती लपेटी ! शॉल ओढ़ा, और नंगी सो रही कामिनी पर एक निगाह डाल कर मेन-गेट की तरफ लपका !

उसके दरवाजे तक पहुँचते-पहुँचते घंटी दो बार और बजी ! मेन-गेट पर पहुँच कर उसने दरवाजा खोला !
सामने शिवशंकर के साथ सुनील खड़ा था ! सुलेमान की खोंपड़ी भन्ना गई !
आगे बढ़ कर सुनील हड़बड़ा कर सुलेमान के घुटनों पर गिरा-"आदाब अर्ज है हुजूर"-सुनील बोला !
सुलेमान गिरते-गिरते बचा-"तुम पर मालिक की रहमत कायम रहे बच्चा, क्या बात है?"
उठ कर खड़े होते हुए सुनील ने हाथ जोड़ लिया-"आप से वशीकरण-मंत्र की दीक्षा लेने आए हैं हुजूर !"
"वशीकरण मंत्र?"- सुलेमान सकपकाया !
"हाँ, सुंदर-सुंदर कन्याओं को वश में करने वाला वशीकरण मंत्र .. आप तो इस मंत्र को जरूर सिद्ध किए होंगे जनाब ?"
सुलेमान चकराया-"मैंने कभी इस मंत्र की शिक्षा नहीं ली !"
"तो जनाब"-सुनील बोला-"बिना इस मंत्र के आप कन्याओं को वश में कैसे कर लेते हैं?"
सुलेमान का मस्तिष्क चकरा उठा ! क्या सुनील अंदर सो रही कामिनी के बारे में जान गया था?
सुनील की बावत उसके दिमाग ने सरगोशी की, बेवकूफों सा बात करने वाला ये आदमी जरूरत से ज्यादा खतरनाक है!
अभी वो यही सब सोंच रहा था कि आगे बढ़ कर इंस्पेक्टर शिवशंकर सख्त स्वर में बोला-"हम आपके इस आवास की तलाशी लेने आए हैं! हमें अपने मुखबिरों से सुचना मिली है कि आपका ये बंगला व्याभिचार और अय्याशी का अड्डा है !"
"आपको"-खोंखले स्वर में सुलेमान बोला-"गलत सूचना मिली है ! यहाँ ऐसा कुछ नहीं होता !"
"देखेंगे"-शुष्क स्वर में शिवशंकर बोला-"अभी फिल्हाल हमें अपना काम करने दीजिए !"
"बच्चा.. सर्च वारंट लाए हो?"
जवाब में शिवशंकर ने जेब से एक पर्ची निकाला-"मुझे मालूम था कि बिना सर्च-वारंट के आप मुझे तलाशी नहीं लेने दोगे ! सो लेकर आया हूँ !"
पेपर देख कर सुलेमान का चेहरा उतर गया ! किसी हारे हुए जुआरी की तरह वो शिवशंकर को देखने लगा !
अचानक वो अंदर की तरफ लपका ! सुनील तुरंत उसका रास्ता रोक कर खड़ा हो गया–"हुजूर तमें कुत्र गच्छति?"
जवाब देने की जगह सुलेमान मुँह लटका कर खड़ा हो गया ! उसे लेकर सुनील और शिवशंकर अंदर प्रविष्ट हुए !
सुनील आगे-आगे दोनों को साथ लेकर सुलेमान के बेड-रूम में पहुँचा !

कामिनी तब तक जाग चुकी थी ! जिस वक्त सुनील अंदर घुसा ! एक क्षण, सिर्फ एक क्षण के लिए सुनील और कामिनी की निगाहें मिली ! और इसके बाद तत्काल शिवशंकर को देख कर उसने चौंकने की जबरदस्त एक्टिंग की !
फिर चादर उठा कर अपना शरीर ढका ! और डरने का नाटक करती हुई एक तरफ खड़ी हो गई !
"अच्छा"-ब्यंग्य-पूर्ण स्वर में इंस्पेक्टर बोला-"तो यही सब कुछ चल रहा है यहाँ !"
सुलेमान की उपर की सांस उपर और नीचे की सांस नीचे रह गई ! उसने बेचैनी से पहलू बदला !
"राम-राम"-सुनील ने बुरा सा मुँह बनाया-"यहां तो पलंगतोड़ क्रांति हो रही थी !"
सुलेमान से कोई जवाब देते न बना !
शिवशंकर बोला–"यानी कि हमारे मुखबिर ने सही सूचना दी थी ! मैं आप दोनों को देह-धंधे के जुर्म में गिरफ्तार करता हूँ !"
हिम्मत जुटा कर चैलेंज देते हुए सुलेमान बोला-"तुम मुझे इतनी आसानी से अरेस्ट नहीं कर सकते !"
"क्यों भला"?-ब्यंग्य-पूर्वक इंस्पेक्टर बोला-"क्यो नहीं कर सकता तुम्हे अरेस्ट?"
"क्योंकि"- सुलेमान बोला-"तुम देह-धंधे का जुर्म साबित नहीं कर सकते ! वो इसलिए क्योंकि, ये मोहतरमा कोई बेश्या नहीं मेरी मुरीद है !"
"सोलह आने गलत जनाब"-सुनील बोला–"ये देवी आपकी नही मेरी, यानी कि सुनील दी ग्रेट की मुरीद है ! और जरूरत पड़ने पर ये कोर्ट में कबूल करेगी कि ये कॉल-गर्ल है !"
सुलेमान ने हकबका कर कामिनी की तरफ देखा ! जवाब में कामिनी बड़े हीं आकर्षक भाव से मुस्कुराई !
सुलेमान ने फिर हकबका कर सुनील की तरफ देखा !
सुनील मुस्कुराया–"तांत्रिक महोदय, मैं अभी इस कन्या का मेडिकल कराउंगा ! इसके कपड़ों या अंगो पर से स्पर्म का सैंपल लेकर उसे लेबोरेटरी भिजवाउंगा ! जहाँ बड़ी आसानी से ये साबित हो जाएगा कि सैंपल में किसी पुरुष के भी स्पर्म थे ! ऊपर से ये देवी भरी अदालत में सबके सामने कबूल करेगी कि आपने इसके साथ पलंग-तोड़ क्रांति की है ! फिर सोंचिए, सजा तो आपको जो होगी सो होगी ! इसके साथ आपकी इज्जत की भी चटनी बन जाएगी !"
सुनील की बात सुन कर सुलेमान धम्म से जमीन पर माथा पकड़ कर बैठ गया !
धीरे से सुनील बोला-"इंस्पेक्टर शिवशंकर तुमको गिरफ्तार नहीं करेगा ! इसका एक उपाय है मेरे पास !"
सुलेमान ने सिर उठा कर बड़ी उम्मीद से सुनील की तरफ देखा !

सुनील बोला-“मैं जानता हूँ, तुम्हारे पास तंत्र-मंत्र की कोई विधा नहीं है प्यारे ! तुम बस पैसे कमाने के लिए तंत्र विधा के नाम पर पब्लिक को मामू बनाते हो ! तुम इस केस के सुलझ जाने के बाद ये सब पाखंड छोड़ कर लोगों को मामू बनाना छोड़ दोगे !"
सुलेमान सोंचने लगा !
"सोंच लो प्यारे”-सुनील बोला-“छोड़ दोगे तो इज्जत बची रहेगी ! वरना वैसे भी जेल जाओगे तो ये सब छूट हीं जाएगा! ऊपर से बदनामी होगी सो अलग !"
"ठीक है”- सुलेमान ने हार मान ली-"मैं ये सब कुछ छोड़ दूंगा !"
"और हाँ प्यारे, तुम बाद में अपनी बात से मुकर सकते हो ! लेकिन याद रखना, तुम्हें जेल भिंजवाने या पब्लिक से पिटवाने के लिए मेरे पास और भी सबूत है !"
सुलेमान फिर हकबकाया !
मुस्कुराते हुए सुनील ने कामिनी की तरफ देखा ! मुस्कुराते हुए कामिनी टेबल के पास गई ! जहाँ एक मोबाइल स्टैंड-पोजीशन में टेबल पर रखा हुआ था ! जिसके कैमरे का रूख बेड की तरफ था !
कामिनी ने मोबाइल उठा कर रिकॉर्ड की हुई विडियो चलाई ! और वहीं से स्क्रीन का रूख सुलेमान की तरफ किया !
पहले सीन में हीं सुलेमान कामिनी के निप्पल चूस रहा था !
सुनील ने अपनी आँखे मूँद ली-“जय बजरंग बली... बंद करो देवी, पूरी फिल्म की जगह ट्रेलर हीं काफी है ! इतने से हीं इनके इज्जत का शरबत बन जाएगा !"
कामिनी ने विडियो बंद कर दिया !
सुलेमान का रहा-सहा कसर भी निकल गया ! उसने चुपचाप सिर झुका लिया !
सुनील कामिनी के पास बेड पर जाकर आराम से बैठ गया ! और इंस्पेक्टर से बोला-"अब जो पूछना है, पूछ लो प्यारे !”
शिवशंकर ने सुलेमान से सवाल किया- “मकतूला सुधा के बारे में क्या जानते हो ?"
सिर झुकाए सुलेमान बोला-"सुधा के बारे में मैं ज्यादा कुछ नहीं जानता हूँ !”
"ओके.”-शिवशंकर बोला-"जितना कुछ जानते हो, वही बता दो !"
सुलेमान ने बताना शुरू किया-"जिस दिन हैरीटेज हॉस्टल हत्याकांड के रुप में शीतल राजपूत नाम की लड़की का कत्ल हुआ था ! बात उसके अगले दिन की है ! मेरे पास एक औरत, जो मकतूला शीतल राजपूत की माँ सुधा राजपूत थी, आई !
आगे उसने बताया कि उसकी बेटी सुधा के कत्ल के केस को पिशाच-लीला समझा जा रहा था ! अतः वो मेरे पास अपनी शंका मिटाने आई थी !
मैने भी उससे ये कह दिया कि वो कत्ल वाकई एक पिशाच-लीला हीं थी ! और मैं उस पिशाच को काबू में कर सकता था ! और उससे ये भी कह दिया कि हो सकता है, उस पिशाच का अगला शिकार तुम हो जाओ !"